



जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार

WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English

WEBSITE : www.janjanvichar.in



RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 3 July 2026 :: Year-1 Vol-25 Issue-4 :: शुक्रवार 13 जुलाई 2026 | शक संवत् 1948 | आषाढ़ कृष्ण | तृतीया :: पृष्ठ-20 | मूल्य - 15 रुपए

जन चिंतन

धनेश्वर चौधरी

बेंच पर प्रतिभा

भारतीय क्रिकेट में प्रतिभा की कभी कमी नहीं रही। हर पीढ़ी में ऐसे खिलाड़ी आए जिन्होंने अपनी मेहनत और प्रदर्शन के दम पर दुनिया को चौंकाया। लेकिन एक सवाल बार-बार सामने आता है-क्या भारतीय क्रिकेट व्यवस्था युवा प्रतिभाओं पर भरोसा करने का साहस भी रखती है?

15 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी का नाम पिछले कुछ महीनों से भारतीय क्रिकेट की सबसे बड़ी चर्चाओं में शामिल है। घरेलू क्रिकेट हो या इंडियन प्रीमियर लीग, उन्होंने अपने प्रदर्शन से चयनकर्ताओं का ध्यान खींचा। राष्ट्रीय दल में स्थान भी मिला, लेकिन जब मैदान पर उतरने का समय आया तो उन्हें दर्शक बनकर रहना पड़ा।

यदि किसी खिलाड़ी को खिलाना ही नहीं था, तो **शेष पृष्ठ 2 पर**

सिंधु जल संधि पर फिर बढ़ा तनाव

बिलावल ने दी परमाणु हमले की धमकी

नई दिल्ली/इस्लामाबाद। भारत द्वारा सिंधु जल संधि को स्थगित रखने के निर्णय के बीच पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष बिलावल भुट्टो-जर्दारी ने एक बार फिर भारत के खिलाफ तीखी बयानबाजी करते हुए कहा है कि यदि पाकिस्तान के जल अधिकारों को गंभीर रूप से प्रभावित किया गया, तो इसे राष्ट्रीय अस्तित्व का मुद्दा माना जाएगा और देश अपनी सुरक्षा नीति के अनुरूप प्रतिक्रिया देने का अधिकार सुरक्षित रखेगा।

इस्लामाबाद में सिंधु जल संधि पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में बिलावल ने दावा किया कि पाकिस्तान के लिए पानी केवल पर्यावरण या कूटनीति का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न है। उन्होंने कहा कि यदि जल स्रोतों को बाधित करने जैसी स्थिति उत्पन्न होती है, तो पाकिस्तान इसे अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे के रूप में देखेगा।

भारत ने पिछले वर्ष पहलगांम आतंकी हमले के बाद सिंधु जल संधि को स्थगित करने का निर्णय लिया था। इसके बाद से पाकिस्तान लगातार इस मुद्दे को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाने का प्रयास कर रहा है और भारत के फैसले का विरोध कर रहा है।

विशेषज्ञों के अनुसार, पाकिस्तान की लगभग 80 प्रतिशत कृषि सिंधु नदी प्रणाली के जल पर निर्भर है। इसी कारण इस संधि को लेकर इस्लामाबाद की चिंता लगातार बढ़ी हुई है।



भारत-पाक के 117 प्रमुख लोगों ने मोदी-शहबाज को पत्र लिखा

नई दिल्ली/इस्लामाबाद। भारत-पाकिस्तान के रिश्तों के सुधारने के लिए दोनों देशों की 117 हस्तियों ने प्रधानमंत्री मोदी और पाक पीएम शहबाज शरीफ को चिट्ठी लिखी है।

इसमें दोनों प्रधानमंत्रियों से कहा गया है कि टकराव नहीं, बातचीत का रास्ता चुनिए, ताकि दक्षिण एशिया में शांति और विकास का माहौल बन सके।

चिट्ठी में लिखा गया है कि लगातार तनाव से दोनों देशों के आम लोगों और खासकर युवाओं का भविष्य प्रभावित हो रहा है। इन 117 हस्तियों में पूर्व अधिकारी, सामाजिक और राजनीतिक हस्तियां शामिल हैं।

भारत की ओर से जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम फारूक अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती, मीरवाइज उमर फारूक और आरजेडी सांसद मनोज झा समेत 61 लोगों ने चिट्ठी पर साइन किए हैं।

पाकिस्तान की ओर से पूर्व विदेश मंत्री खुर्शीद महमूद कसूरी

समेत 56 लोगों ने इसका समर्थन किया है।

क्या है पत्र में-

1. दोनों देशों के बीच संवाद दोबारा शुरू हो

अभी की स्थिति: 25 दिसंबर 2015 को पीएम नरेंद्र मोदी ने लाहौर जाकर नवाज शरीफ से मुलाकात की थी। इसके बाद 2 जनवरी 2016 के पठानकोट आतंकी हमले के बाद व्यापक द्विपक्षीय वार्ता लगभग ठप हो गई।

2. जम्मू-कश्मीर समेत सभी विवादित मुद्दों पर बातचीत हो

अभी की स्थिति : 5 अगस्त 2019 को भारत ने अनुच्छेद 370 हटाया। इसके बाद पाकिस्तान ने द्विपक्षीय बातचीत और कूटनीतिक रिश्तों को सीमित कर दिया।

3. सैन्य तनाव कम हो

अभी की स्थिति : 25 फरवरी 2021 को दोनों देशों ने एलओसी पर 2003 के सीजफायर समझौते का फिर से पालन करने पर सहमति जताई। इसके बावजूद हालिया आतंकी घटनाओं **शेष पृष्ठ 3 पर**

रोने-धोने से फायदा नहीं होगा..पाकिस्तान से कहें घुटने टेक दे, हिना को भारत का जवाब

नई दिल्ली/इस्लामाबाद। सिंधु जल संधि को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच कूटनीतिक तनाव के साथ-साथ तीखी बयानबाजी भी तेज हो गई है। पाकिस्तान की पूर्व विदेश मंत्री हिना रब्बानी खार ने इस्लामाबाद में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत द्वारा संधि को निलंबित किए जाने की आलोचना करते हुए कहा कि इससे भारत की अंतर्राष्ट्रीय छवि प्रभावित

हुई है और उसने वैश्विक नियम-आधारित व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न खड़ा किया है।

हिना रब्बानी खार ने अपने संबोधन में कहा कि सिंधु जल संधि दो युद्धों के बावजूद कायम रही थी, लेकिन इसे निलंबित करना अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के विपरीत है।

उनके बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए भारतीय सेना के पूर्व अधिकारी

एवं राष्ट्रीय सुरक्षा विशेषज्ञ मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) हर्ष कक्कड़ ने कहा कि केवल अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की आलोचना करने से कोई समाधान नहीं निकलेगा। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि जब तक पाकिस्तान सीमा पार आतंकवाद और अपने रवैये में बदलाव नहीं लाता, तब तक सिंधु जल संधि पर भारत का रुख बदलने की संभावना नहीं है।

दुर्द से कराहती 'मानिकी' को मिली नई जिंदगी

जन जन विचार

... गुवाहाटी/जामनगर

वर्षों तक दर्द, बीमारी और उपेक्षा झेलने वाली 48 वर्षीय हथिनी 'मानिकी' की जिंदगी ने आखिरकार नया मोड़ ले लिया है। असम में इलाज के लिए राजमार्ग पर लंगड़ाते हुए ले जाए जाने का उसका वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आने के बाद



देशभर में चिंता और संवेदना की लहर दौड़ गई। इसके बाद आवश्यक कानूनी और प्रशासनिक मंजूरी के साथ उसे सुरक्षित रूप से जामनगर स्थित 'वनतारा' स्थानांतरित किया गया, जहां अब उसका विशेष उपचार और दीर्घकालिक पुनर्वास किया जाएगा।

चिकित्सकीय जांच के अनुसार **शेष पृष्ठ 5 पर**

वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर प्रतियोगिता आयोजित



जन जन विचार

... गुवाहाटी

भारत विकास परिषद, मध्य गुवाहाटी शाखा की ओर से 2 जुलाई

को लालचंद ओंकारमल हाई स्कूल, फैसी बाजार में 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में वंदे मातरम् गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में विद्यालय की आठ टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त टीमों को स्मृति-चिह्न और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में भारत विकास परिषद, असम प्रांत के प्रभारी संतलाल मित्तल, शाखा सचिव अभय घोषाल, सहसचिव राजीव राय, कोषाध्यक्ष विजय सिंह सुराणा, मीडिया प्रभारी तनसुख राठी सहित सुरेश गर्ग, विश्वंभर शर्मा एवं अन्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

नाजिरा विद्यालय के पूर्व छात्रों की बैठक 5 को, तैयारियां शुरू

नाजिरा। ऐतिहासिक नाजिरा उच्चतर माध्यमिक बहुमुखी विद्यालय के पूर्व छात्रों की एक महत्वपूर्ण बैठक आगामी 5 जुलाई को दोपहर 1 बजे विद्यालय परिसर में आयोजित होगी।



वर्ष 1902 में स्थापित इस विद्यालय ने अपने 125 वर्षों के गौरवशाली इतिहास में शिक्षा, संस्कार और समाज निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया है। विद्यालय के पूर्व छात्र देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं।

बैठक का उद्देश्य पूर्व छात्रों के बीच आपसी संबंधों को सुदृढ़ करना तथा एक सक्रिय एवं सशक्त पूर्व छात्र संगठन का गठन करना है। आयोजकों ने विद्यालय के सभी पूर्व छात्रों से निर्धारित समय पर उपस्थित होकर इस पहल को सफल बनाने और अपने सुझाव एवं सहयोग प्रदान करने की अपील की है।

रोहा में विदाई व सम्मान समारोह आयोजित

जन जन विचार

... रोहा

रोहा के डी आतोय विद्यापीठ में विदाई एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त प्रधान शिक्षक मित्र राजखोवा को सम्मानपूर्वक विदाई दी गई तथा चार प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का अभिनंदन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता केंद्र

अध्यक्ष अनुप्रभा देवी ने की, जबकि सचिव लखी प्रसाद डेका ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस अवसर पर मित्र राजखोवा को फूलाम गामोछा, अभिनंदन पत्र, स्मृति-चिह्न एवं धार्मिक ग्रंथ भेंट कर उनके स्वस्थ एवं सुखद जीवन की कामना की गई।

कार्यक्रम में मैट्रिक परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले दर्पण ज्योति नाथ और रिमझिम तालुकदार

तथा नेपाल में आयोजित 12वीं मयूर कप अंतर्राष्ट्रीय कराटे प्रतियोगिता में पदक जीतने वाले मयूख नंदन नाथ एवं हियाखी देवी को प्रशस्ति-पत्र, कलम और फूलाम गामोछा देकर सम्मानित किया गया।

समारोह में प्रखंड शिक्षा अधिकारी गीतारानी देवी, शिक्षक-शिक्षिकाएं, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में स्थानीय गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

बेंच पर प्रतिभा

उसे दल में शामिल करने का उद्देश्य क्या था? क्या केवल सुखियां बटोरना? क्या युवा खिलाड़ी का चयन केवल भविष्य का संदेश देने के लिए था या वास्तव में उसे अवसर देने की मंशा भी थी?

आयरलैंड के विरुद्ध भारत को 0-2 से श्रृंखला गंवानी पड़ी। बल्लेबाजी लड़खड़ाई, रणनीति पर सवाल उठे और परिणाम निराशाजनक रहे। इसके बावजूद अंतिम एकादश में बदलाव की हिम्मत नहीं दिखाई गई। जब अनुभवी खिलाड़ी अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पा रहे थे, तब एक प्रतिभाशाली युवा को अवसर देने में संकोच क्यों?

कप्तान श्रेयस अय्यर का यह कहना उचित है कि टीम की रणनीति सार्वजनिक नहीं की जा सकती। कोई भी कप्तान विपक्ष के सामने अपने पक्ष नहीं खोलेगा। लेकिन रणनीति और पारदर्शिता में अंतर होता है। देश के करोड़ों

क्रिकेट प्रेमियों का यह जानना स्वाभाविक है कि जिस खिलाड़ी को राष्ट्रीय दल में चुना गया है, उस पर भरोसा कब किया जाएगा।

भारतीय क्रिकेट का इतिहास बताता है कि बड़े खिलाड़ी अवसर मिलने से बने हैं। यदि कभी 16 वर्षीय सचिन तेंदुलकर को यह कहकर रोक दिया जाता कि अभी समय नहीं आया है, यदि ऋषभ पंत, यशस्वी जायसवाल या शुभमन गिल को लगातार प्रतीक्षा ही कराई जाती, तो शायद भारतीय क्रिकेट कई सितारों से वंचित रह जाता। प्रतिभा अनुभव से बड़ी नहीं होती, लेकिन अवसर के बिना अनुभव भी नहीं बनता।

यह भी उतना ही सच है कि केवल लोकप्रियता के आधार पर किसी खिलाड़ी को अंतिम एकादश में नहीं रखा जा सकता। चयन का आधार योग्यता, परिस्थितियां और टीम का संतुलन होना चाहिए। किंतु जब चयन हो चुका है और प्रदर्शन करने वाले वरिष्ठ खिलाड़ी लगातार असफल हो रहे हों, तब नई प्रतिभा को अवसर देने से बचना कई प्रश्न खड़े करता है।

भारतीय क्रिकेट को यह तय करना होगा कि वह युवाओं को केवल विज्ञापनों और प्रचार का चेहरा बनाएगा या मैदान पर जिम्मेदारी भी देगा। प्रतिभा को बार-बार प्रतीक्षा कक्ष में बैठाकर भविष्य की मजबूत टीम नहीं बनाई जा सकती।

क्रिकेट केवल वर्तमान का खेल नहीं, भविष्य का भी निवेश है। यदि चयनकर्ता और टीम प्रबंधन युवा खिलाड़ियों पर भरोसा करने का साहस नहीं दिखाएंगे, तो अगली पीढ़ी के सितारे कैसे तैयार होंगे?

अब इंग्लैंड के विरुद्ध श्रृंखला केवल जीत-हार की परीक्षा नहीं है। यह भारतीय क्रिकेट प्रबंधन की सोच की भी परीक्षा है। यदि वैभव सूर्यवंशी जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ी को फिर अवसर नहीं मिलता, तो यह सवाल और तेज होगा कि क्या भारतीय क्रिकेट में चयन का दरवाजा प्रदर्शन से खुलता है या केवल प्रतीक्षा से?

प्रतिभा को अवसर चाहिए, आश्वासन नहीं। बेंच पर बैठाकर कोई खिलाड़ी महान नहीं बनता।

साप्ताहिक राशिफल

3 से 9 जुलाई 2026। विक्रम संवत् 2083-मास : आषाढ़, पक्ष : कृष्ण, तिथि : तृतीया

मेघ : नई योजनाओं पर काम शुरू होगा और करियर में अच्छे अवसर मिल सकते हैं। व्यापार में लाभ होगा तथा परिवार का सहयोग मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा।

वृषभ : आर्थिक मामलों में लाभ मिलने के योग हैं। नौकरी और व्यापार में प्रगति होगी। परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा तथा रिश्तों में मधुरता बढ़ेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

मिथुन : इस सप्ताह काम में तेजी रहेगी और नए मौके मिल सकते हैं। आपकी मेहनत का अच्छा फल मिलेगा। लेकिन गुस्सा और जल्दबाजी रिश्तों और फैसलों को प्रभावित कर सकती है, इसलिए संयम जरूरी है।

सिंह : आत्मविश्वास बढ़ेगा और कार्यक्षेत्र में सम्मान मिलेगा। व्यापार में लाभ तथा संपत्ति से जुड़े मामलों में सफलता मिल सकती है। परिवार के साथ अच्छा समय बीतेगा।

कन्या : इस सप्ताह चुनौतियां सामने आएंगी लेकिन आप उन्हें सफलतापूर्वक संभाल लेंगे।

तुला : आर्थिक स्थिति मजबूत होने के संकेत हैं। आत्मविश्वास और सफलता का समय है।

वृश्चिक : रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी और मानसिक शांति बढ़ेगी। धन लाभ के संकेत हैं।

धनु : मेहनत ज्यादा करनी पड़ेगी लेकिन परिणाम संतोषजनक रहेंगे। काम का दबाव रहेगा, फिर भी आप अपनी जिम्मेदारियां अच्छे से निभा पाएंगे।

मकर : स्थिर प्रगति का समय है। परिवार का सहयोग मिलेगा और निवेश से लाभ हो सकता है। सफलता धीरे-धीरे मिलेगी, इसलिए धैर्य बनाए रखें।

कुंभ : आर्थिक स्थिति मजबूत होने के संकेत हैं। नए काम, जिम्मेदारियां और सीखने के अवसर मिलेंगे। करियर में प्रगति संभव है, लेकिन काम का दबाव और थकान बढ़ सकती है।

मीन : नए काम, जिम्मेदारियां और सीखने के अवसर मिलेंगे। करियर में प्रगति संभव है, लेकिन काम का दबाव और थकान बढ़ सकती है।

कर्क : भावनात्मक उतार-चढ़ाव महसूस हो सकता है। काम सामान्य रहेगा लेकिन मानसिक शांति बनाए रखना जरूरी है।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

3 जुलाई (शुक्रवार) : संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी व्रत

7 जुलाई (मंगलवार) : काला अष्टमी

8 जुलाई (बुधवार) : श्री शीतलाष्टमी व्रत



● ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल

भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड

फैसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

असम का लक्ष्य : रोजाना 10 लाख लीटर दूध उत्पादन

जन जन विचार

... गुवाहाटी

असम सरकार ने राज्य को दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए प्रतिदिन 10 लाख लीटर दूध उत्पादन के लक्ष्य को दोहराया है। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि सरकार आधुनिक दुग्ध उत्पादन, पशुपालन और सहकारी व्यवस्था को मजबूत बनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति देने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य के 25 हजार से अधिक दुग्ध उत्पादकों को अनुदान उपलब्ध कराया जा रहा है, जिससे उत्पादन क्षमता बढ़ाने, आधुनिक तकनीक अपनाने और किसानों की आय में वृद्धि सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने कहा कि 'दूध का हर गिलास एक परिवार के पोषण के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करता है।'



4,000 दुग्ध सहकारी समितियों की योजना

सरकार ने राज्यभर में 4,000 दुग्ध सहकारी समितियां स्थापित करने की योजना बनाई है। इन समितियों के माध्यम से गांव-गांव से दूध संग्रह कर आधुनिक

प्रसंस्करण केंद्रों तक पहुंचाया जाएगा। इससे दुग्ध उत्पादकों को उचित मूल्य मिलने के साथ रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

200 करोड़ रुपये का आधुनिक दुग्ध संयंत्र

सरकार ने जोरहाट जिले के

मरियानी में लगभग 200 करोड़ रुपये की लागत से आधुनिक दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने की योजना भी बनाई है। इस परियोजना से स्थानीय दुग्ध उत्पादकों को बड़ा बाजार मिलेगा और राज्य में दूध प्रसंस्करण क्षमता में उल्लेखनीय

वृद्धि होगी।

पशुपालन और मत्स्य क्षेत्र पर विशेष ध्यान

नई दिल्ली प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री राजीव रंजन सिंह (ललन सिंह) से मुलाकात कर राज्य के पशुपालन और मत्स्य क्षेत्र के विकास पर विस्तृत चर्चा की। बैठक में पशु चिकित्सालयों को सुदृढ़ करने, पशु औषधि केंद्र स्थापित करने, उच्च गुणवत्ता वाले दुग्ध प्रसंस्करण एवं दुग्ध चूर्ण संयंत्र लगाने तथा कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से उन्नत नस्ल के पशुओं के विकास पर सहमति बनी।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मिलेगी नई मजबूती

सरकार का मानना है कि इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन से राज्य की अन्य राज्यों पर दूध की निर्भरता कम होगी, किसानों की आय बढ़ेगी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

दस्तावेज बहुत, सबूत अधूरे : 15 प्रमाणपत्र भी नहीं बचा सके नागरिकता का दावा

जन जन विचार

... गुवाहाटी

असम में नागरिकता से जुड़े एक महत्वपूर्ण मामले में गौहाटी उच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि केवल अधिक संख्या में दस्तावेज प्रस्तुत कर देने से किसी व्यक्ति की भारतीय नागरिकता स्वतः सिद्ध नहीं हो जाती। न्यायालय ने एक याचिकाकर्ता की याचिका खारिज करते हुए विदेशी न्यायाधिकरण के उस निर्णय को बरकरार रखा, जिसमें उसे विदेशी घोषित किया गया था।

याचिकाकर्ता ने अपनी नागरिकता साबित करने के लिए 15 दस्तावेज प्रस्तुत किए थे। इनमें 1951 की राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) की प्रति, विभिन्न वर्षों की मतदाता सूचियां, वर्ष 1973 का भूमि दस्तावेज, विद्यालय प्रमाणपत्र, स्थायी खाता

संख्या (पैन) कार्ड तथा मतदाता पहचान पत्र शामिल थे। इसके बावजूद न्यायालय ने माना कि प्रस्तुत दस्तावेज कानून के अनुसार नागरिकता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त और विश्वसनीय नहीं हैं।

न्यायालय ने किन आधारों पर दावा खारिज किया ?

न्यायालय ने कहा कि 1951 की एनआरसी की प्रति विधि सम्मत रूप से प्रमाणित नहीं थी। विद्यालय प्रमाणपत्र के समर्थन में न तो प्रधानाचार्य की गवाही प्रस्तुत की गई और न ही प्रवेश पंजिका उपलब्ध कराई गई। भूमि संबंधी दस्तावेज से उत्तराधिकार की स्पष्ट कड़ी स्थापित नहीं हो सकी। वहीं पैन कार्ड और मतदाता पहचान पत्र को न्यायालय ने नागरिकता का कानूनी प्रमाण मानने से इनकार कर दिया।

अदालत ने यह भी पाया कि विभिन्न



मतदाता सूचियों में परिवार के सदस्यों की आयु, निवास स्थान और पारिवारिक संबंधों में कई गंभीर विरोधाभास थे। परिवार के नाम अलग-अलग समय में तीन गांवों की मतदाता सूचियों में दर्ज मिले, लेकिन उनके बीच विश्वसनीय दस्तावेजी संबंध स्थापित नहीं किया जा सका।

नागरिकता सिद्ध करने का दायित्व किसका ?

गौहाटी उच्च न्यायालय ने अपने निर्णय

में स्पष्ट किया कि विदेशी अधिनियम, 1946 की धारा 9 के अनुसार नागरिकता सिद्ध करने का भार संबंधित व्यक्ति पर होता है। केवल दस्तावेज प्रस्तुत करना पर्याप्त नहीं, बल्कि यह भी आवश्यक है कि वे विधि सम्मत रूप से प्रमाणित हों तथा उनसे व्यक्ति का अपने पूर्वजों से स्पष्ट संबंध स्थापित होता हो।

न्यायालय ने मौखिक गवाही को भी पर्याप्त नहीं माना और कहा कि नागरिकता जैसे संवेदनशील मामलों में दस्तावेजी साक्ष्य सर्वोपरि होते हैं।

दूरगामी महत्व का फैसला

इस निर्णय को असम में नागरिकता संबंधी मामलों के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। अदालत ने स्पष्ट संदेश दिया है कि दस्तावेजों की संख्या नहीं, बल्कि उनकी वैधानिक स्वीकार्यता, प्रमाणिकता और आपसी संगति ही नागरिकता निर्धारण का आधार होगी।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

भारत-पाक के 117 प्रमुख लोगों ने ...

के बाद तनाव बना हुआ है।

4. लोगों के बीच संपर्क बढ़े

अभी की स्थिति : अप्रैल 2025 के पहलगाम आतंकी हमले के बाद दोनों देशों ने नागरिकों की आवाजाही पर कड़े प्रतिबंध लगाए और वीजा सर्विस बंद कर दी गई।

5. सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंध बेहतर हों

अभी की स्थिति : 2016 (उरी हमले) के बाद कलाकारों के आदान-प्रदान और अधिकांश सांस्कृतिक कार्यक्रम लगभग बंद हो गए। विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग भी बहुत सीमित है।

6. क्रिकेट और अन्य खेलों की द्विपक्षीय सीरीज शुरू हो

अभी की स्थिति : भारत और पाकिस्तान के बीच आखिरी द्विपक्षीय क्रिकेट सीरीज 2012-13 में खेली गई

थी। इसके बाद दोनों टीमों सिर्फ आईसीसी और एशिया कप जैसे टूर्नामेंट में मिली हैं।

7. दोनों देशों के बीच हवाई सेवा शुरू हो

अभी की स्थिति : 24 अप्रैल 2025 के बाद दोनों देशों ने एक-दूसरे के विमानों के लिए अपना हवाई क्षेत्र बंद कर दिया। तब से सीधी उड़ानें बंद हैं।

8. वीजा प्रक्रिया आसान हो

अभी की स्थिति : 24 अप्रैल 2025 के बाद अधिकांश वीजा सेवाएं निलंबित कर दी गईं और कई नागरिकों को वापस लौटना पड़ा।

9. हाई कमिश्नर दोबारा नियुक्त हों

अभी की स्थिति : अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 हटने के बाद पाकिस्तान ने अपना हाई कमिश्नर वापस बुला लिया। भारत ने भी अपना हाई कमिश्नर वापस बुला लिया था। तब से दोनों देशों में पूर्णकालिक हाई कमिश्नर नहीं हैं।

10. बस सेवा, करतारपुर कॉरिडोर और अटारी-वाघा

बॉर्डर फिर खोला जाए

अभी की स्थिति : समझौता एक्सप्रेस और थार एक्सप्रेस अगस्त 2019 से बंद हैं। दिल्ली-लाहौर बस सेवा भी बंद है। अटारी-वाघा बॉर्डर से सामान्य नागरिक आवाजाही अप्रैल 2025 से प्रभावित है। करतारपुर कॉरिडोर, जो 9 नवंबर 2019 को खुला था, हालिया तनाव के कारण कई बार प्रभावित रहा है।

11. कारोबार फिर शुरू हो

अभी की स्थिति : 9 अगस्त 2019 को पाकिस्तान ने भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार निलंबित कर दिया। तब से सीमित वस्तुओं को छोड़कर सामान्य व्यापार लगभग बंद है।

यह पहल ऐसे समय में की गई है जब हाल के महीनों में भारत और पाकिस्तान के संबंधों में तनाव बना हुआ है। इनका कहना है कि लगातार बढ़ती शत्रुता से दोनों देशों के विकास, क्षेत्रीय स्थिरता और आम नागरिकों के हित प्रभावित हो रहे हैं।

संपादकीय

नशे का बढ़ता जाल

किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी उसकी युवा शक्ति होती है। यदि यही युवा नशे की गिरफ्त में आने लगे, तो यह केवल स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक स्थिरता और आर्थिक विकास का भी गंभीर प्रश्न बन जाता है। आज मादक पदार्थों का जाल महानगरों से निकलकर गांवों, कस्बों, विद्यालयों और महाविद्यालयों तक फैल चुका है। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है।

बेरोजगारी, मानसिक तनाव, सामाजिक दबाव और त्वरित सफलता की चाह युवाओं को नशे की ओर धकेल रही है। दूसरी ओर, अंतर्राष्ट्रीय तस्करी, डिजिटल माध्यमों और संगठित अपराध ने मादक पदार्थों की उपलब्धता आसान बना दी है। केवल कठोर कानून इस चुनौती का समाधान नहीं हैं। परिवारों का संवाद, शिक्षण संस्थानों में जागरूकता, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का विस्तार तथा युवाओं के लिए बेहतर रोजगार के अवसर भी उतने ही आवश्यक हैं।

नशे के विरुद्ध संघर्ष केवल सरकार का दायित्व नहीं, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक अभियान होना चाहिए। यदि हम अपने युवाओं को सुरक्षित, शिक्षित और उद्देश्यपूर्ण जीवन दे सके, तभी विकसित भारत का सपना साकार होगा। युवाओं के हाथों में नशे की पुड़िया नहीं, ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास होना चाहिए। यही नशामुक्त भारत की वास्तविक पहचान और राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की सबसे मजबूत नींव है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर भरोसा लेकिन आंखें बंद करके नहीं

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के आधार पर प्रस्तुत मनगढ़ंत कानूनी मिसालों को अस्वीकार करना केवल एक न्यायिक निर्णय नहीं, बल्कि डिजिटल युग के लिए एक महत्वपूर्ण चेतावनी भी है। तकनीक जितनी शक्तिशाली होती जा रही है, उसकी त्रुटियां भी उतनी ही गंभीर परिणाम उत्पन्न कर सकती हैं।

एआई शोध, दस्तावेज तैयार करने और सूचनाओं के विश्लेषण में उपयोगी साधन है, लेकिन यह अंतिम सत्य का स्रोत नहीं है। कई बार यह ऐसे तथ्य, निर्णय या संदर्भ प्रस्तुत कर देता है, जिनका वास्तविक अस्तित्व ही नहीं होता। यदि बिना सत्यापन के ऐसी सामग्री पर न्यायिक या प्रशासनिक निर्णय आधारित होने लगे, तो न्याय व्यवस्था की विश्वसनीयता पर गहरा आघात पहुंच सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया है कि तकनीक मानव विवेक का विकल्प नहीं बन सकती। न्यायालय, वकील, प्रशासन और मीडिया-सभी की जिम्मेदारी है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता से प्राप्त प्रत्येक तथ्य की स्वतंत्र जांच और पुष्टि करें। सुविधा के लिए सत्य से समझौता लोकतंत्र और कानून के शासन, दोनों के लिए खतरनाक होगा।

भारत तेजी से डिजिटल युग की ओर बढ़ रहा है। ऐसे समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश, नैतिक मानक और जवाबदेही की व्यवस्था अनिवार्य है। तकनीक का स्वागत होना चाहिए, लेकिन उसका संचालन मानव बुद्धि, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व के अधीन ही रहना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक सक्षम सहायक हो सकती है, न्यायाधीश नहीं। अंतिम निर्णय सदैव सत्यापित तथ्यों, मानवीय विवेक और संविधान की भावना के आधार पर ही होना चाहिए। यही डिजिटल युग में न्याय की सबसे बड़ी कसौटी है।

गला 'शांति दूतों' का सूख रहा

जन जन विचार

... नीरज कुमार दुबे

देखा जाए तो दशकों तक भारतीयों का खून बहाने वाला पाकिस्तान अब पानी की कमी होने पर कांप रहा है और वहां के नेता गीदड़ भभकियां दे रहे हैं। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेता बिलावल भुट्टो जरदारी ने कहा है कि सिंधु पाकिस्तान की जीवनरेखा है और भारत पानी

आतंकवादी भेजता है, हमारे नागरिकों की हत्या करवाता है, सीमा पार से गोलियां चलाता है, उसी देश के लिए इनके दिल में इतनी बेचैनी क्यों उमड़ती है? भारत ने जब पाकिस्तान का पानी रोकने की दिशा में कदम उठाया तो प्यास पाकिस्तान को लगी, लेकिन गला यहां बैठे तथाकथित शांति दूतों का सूखने लगा। आखिर क्यों? क्या इन लोगों को भारत की सुरक्षा से ज्यादा चिंता पाकिस्तान की खेती और उसकी बिजली व्यवस्था की है?

ये लोग कहते हैं कि वार्ता ही समाधान है। लेकिन देश जानना चाहता है कि आखिर कितनी वार्ताएं हो चुकी हैं? लाहौर बस यात्रा से लेकर आगरा शिखर वार्ता तक और उफा से लेकर शरम अल शेख तक भारत ने हर बार शांति का हाथ बढ़ाया। बदले में मिला क्या? कारगिल, संसद हमला, मुंबई हमला, उरी, पुलवामा और अब पहलगाम। पाकिस्तान हर बार वार्ता की मेज पर मुस्कुराता है और पीठ पीछे आतंकियों को भेजता है।



को हथियार बना रहा है। उन्होंने चेतावनी दी है कि पाकिस्तान अपने पानी, अपनी संप्रभुता और अपने भविष्य की रक्षा करेगा। पाकिस्तान के जलवायु मंत्री मुसद्दिक मलिक ने तो यहां तक कह दिया कि जो हाथ उनके पानी को छुएंगे, उन्हें काट दिया जाएगा। पाकिस्तान के सूचना मंत्री अताउल्लाह तरार ने भी भारत पर पानी रोकने का आरोप लगाते हुए आक्रामक बयान दिए। पाकिस्तान के उपप्रधानमंत्री इशाक डार ने दुनिया को डराने की कोशिश की कि यदि सिंधु जल संधि नहीं बची तो द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की पूरी विश्व व्यवस्था खतरे में पड़ जाएगी।

लेकिन पाकिस्तान के इन आंसुओं के पीछे छिपा सच पूरी दुनिया जानती है। पहलगाम में 26 निर्दोष नागरिकों की हत्या करने वाले आतंकवादी कहां से आए थे? जम्मू-कश्मीर में दशकों से आतंकवाद को कौन पालता रहा है? भारत के सैनिकों और नागरिकों का खून बहाने के लिए हथियार, प्रशिक्षण और धन कौन देता रहा है?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिल्कुल सही कहा था कि खून और पानी साथ साथ नहीं बह सकते। भारत ने सिंधु जल संधि को स्थगित करके यह स्पष्ट कर दिया कि अब नई दिल्ली पुरानी नीति पर नहीं चलेगी। यदि पाकिस्तान आतंकवाद को अपनी सरकारी नीति बनाए रखेगा तो उसे हर मोर्चे पर कीमत चुकानी होगी। भारत ने पश्चिमी नदियों पर अपने अधिकार वाले जल के उपयोग को तेज करने का फैसला किया है। यह कोई युद्ध नहीं, बल्कि अपने अधिकारों का प्रयोग है।

साथ ही सबसे बड़ा सवाल उन लोगों से पूछा जाना चाहिए जो भारत में बैठकर पाकिस्तान से वार्ता की मांग कर रहे हैं। हम आपको बता दें कि एक सौ से अधिक तथाकथित बुद्धिजीवियों, नेताओं और सामाजिक हस्तियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और शाहबाज शरीफ को पत्र लिखकर बातचीत बहाल करने, वीजा सेवाएं शुरू करने, दूतावास सामान्य करने और यहां तक कि कश्मीर पर फिर से बातचीत करने की मांग की है। इस पत्र पर फारूक अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती, मीरवाइज उमर फारूक और कुछ अन्य भारतीय हस्तियों के हस्ताक्षर भी हैं।

इन लोगों से देश पूछना चाहता है कि आखिर पाकिस्तान से इतनी मोहब्बत क्यों है? जो देश भारत में

आज जब भारत पहली बार कठोर नीति पर डटा है तो देश के भीतर बैठे कुछ लोग बेचैन हो उठे हैं। उन्हें आतंकवाद पर गुस्सा नहीं आता, लेकिन पाकिस्तान का पानी रुकने पर दर्द होने लगता है। उन्हें भारत के शहीदों की चिंता कम और इस्लामाबाद की परेशानी ज्यादा दिखाई देती है। यह वही मानसिकता है जिसने दशकों तक भारत को कमजोर नीति में बांध कर रखा।

सच यह है कि सिंधु जल संधि का सबसे ज्यादा लाभ पाकिस्तान ने उठाया। भारत ने वर्षों तक उदारता दिखाई, जबकि पाकिस्तान आतंकवाद फैलाता रहा। अब जब नई दिल्ली ने स्पष्ट कर दिया है कि आतंक और व्यापार, आतंक और वार्ता, आतंक और पानी साथ साथ नहीं चल सकते, तब पाकिस्तान दुनिया भर में सहानुभूति जुटाने निकला है। लेकिन दुनिया भी समझ रही है कि समस्या की जड़ कहां है।

पाकिस्तान को यह समझ लेना चाहिए कि धमकियों से भारत डरने वाला नहीं है। पानी को लेकर युद्ध जैसे बयान देने वाले पहले अपने घर की हालत देखें। वहां की अर्थव्यवस्था डगमगा रही है, जनता महंगाई से त्रस्त है और सेना तथा सरकार अपनी विफलताओं को छिपाने के लिए भारत विरोध का सहारा ले रही हैं।

देखा जाए तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पाकिस्तान नीति ने स्पष्ट संदेश दिया है कि नया भारत अब केवल प्रतिक्रिया नहीं देगा, बल्कि अपने हितों की रक्षा के लिए निर्णायक कदम भी उठाएगा। आतंकवाद को पालने वालों को अब हर क्षेत्र में जवाब मिलेगा। पाकिस्तान यदि वास्तव में शांति चाहता है तो उसे पहले आतंकवाद की फैक्टरी बंद करनी होगी। जब तक उसकी धरती से भारत विरोधी आतंक जारी रहेगा, तब तक कोई भी वार्ता केवल छलावा मानी जाएगी।

बहरहाल, भारत की जनता अब भ्रम में नहीं है। देश समझ चुका है कि शांति की सबसे पहली शर्त सुरक्षा है। और जो लोग पाकिस्तान के लिए आंसू बहा रहे हैं, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि भारत की सहनशीलता को कमजोरी समझने की भूल अब कोई नहीं कर सकता। नया भारत अपने सैनिकों के खून का हिसाब भी लेगा और अपने पानी का अधिकार भी बचाएगा।

भारत-जापान संबंधों को नई उड़ान

जन जन विचार

... अयोध्या

भारत और जापान ने अपने रणनीतिक संबंधों को नई ऊंचाई देते हुए रक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री सहयोग और निवेश के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण समझौतों पर सहमति व्यक्त की। नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और जापान की प्रधानमंत्री शाने ताकाइची के बीच हुई शिखर वार्ता के बाद दोनों नेताओं ने संयुक्त रूप से भविष्य की साझेदारी का खाका प्रस्तुत किया।

संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में शाने ताकाइची ने प्रधानमंत्री मोदी द्वारा उन्हें 'छोटी बहन' कहे जाने का उल्लेख करते हुए भावनात्मक अंदाज में कहा कि वह प्रधानमंत्री मोदी को अपना 'बड़ा भाई' मानती हैं। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच विश्वास और आत्मीयता का यह रिश्ता आने वाले वर्षों में रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करेगा।

रक्षा और समुद्री सुरक्षा

पर विशेष जोर

बैठक में हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता और सुरक्षित समुद्री मार्गों को सुनिश्चित करने पर विशेष सहमति बनी। दोनों देशों ने



नौसेनाओं के बीच संयुक्त अभ्यास बढ़ाने, हिंद महासागर क्षेत्र में सहयोग मजबूत करने तथा 'मेक इन इंडिया' अभियान के अंतर्गत रक्षा उपकरणों के निर्माण और युद्धपोतों की मरम्मत के क्षेत्र में साझेदारी बढ़ाने का निर्णय लिया।

इसी वर्ष के अंत तक भारत-जापान 'दो प्लस दो' मंत्रिस्तरीय बैठक आयोजित करने की भी घोषणा की गई, जिसमें विदेश और रक्षा सहयोग की व्यापक समीक्षा होगी।

दो ट्रिलियन येन

के निवेश का संकल्प

आर्थिक सहयोग को नई गति

देते हुए दोनों देशों के बीच लगभग दो ट्रिलियन येन के निवेश संबंधी समझौतों की घोषणा की गई। इस निवेश का उपयोग आधारभूत ढांचे, उन्नत प्रौद्योगिकी, विनिर्माण और औद्योगिक विकास के क्षेत्रों में किया जाएगा।

बैठक के दौरान दोनों देशों की कंपनियों के बीच लगभग 120 व्यावसायिक समझौतों पर भी हस्ताक्षर हुए, जिनसे भारत में रोजगार, तकनीकी विकास और औद्योगिक उत्पादन को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

ऊर्जा सुरक्षा में नई पहल

ऊर्जा क्षेत्र में भारत और जापान ने दीर्घकालिक सहयोग बढ़ाने का निर्णय लिया। भारत की रणनीतिक पेट्रोलियम भंडारण क्षमता को मजबूत करने के लिए द्विपक्षीय वार्ता प्रारंभ होगी। जापान ने अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी में भारत की भूमिका को भी समर्थन देने की बात कही।

इसके साथ ही जैव-ऊर्जा के क्षेत्र में 'जापान-भारत सहकारी जैव-गैस विकास पहल' प्रारंभ करने की घोषणा की गई, जिसके अंतर्गत भारत में एक हजार जैव-गैस संयंत्र स्थापित करने के लक्ष्य को तकनीकी सहयोग प्रदान किया जाएगा।

75 वर्ष के कूटनीतिक

संबंधों की तैयारी

अगला वर्ष भारत और जापान के राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ का होगा। दोनों नेताओं ने इसे ऐतिहासिक अवसर बताते हुए आर्थिक, सामरिक, प्रौद्योगिकीय और सांस्कृतिक सहयोग को नई दिशा देने का संकल्प दोहराया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत-जापान संबंध केवल आर्थिक साझेदारी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, विश्वास और साझा भविष्य की मजबूत नींव पर आधारित हैं।

पीओके में उबाल

इस्लामाबाद/रावलकोट।

पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में पाकिस्तान सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन एक बार फिर तेज हो गए हैं। मंगलवार को रावलकोट के ईदगाह मैदान में हजारों लोग एकत्र हुए और स्थानीय अधिकारों, महंगाई तथा राजनीतिक उपेक्षा के मुद्दों पर सरकार के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने 'हम पाकिस्तान का हिस्सा नहीं हैं' जैसे नारे लगाए और क्षेत्र के लोगों के अधिकारों की मांग की।

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, आंदोलन का नेतृत्व कर रही जम्मू-कश्मीर अवामी एक्शन कमेटी के प्रमुख शौकत नवाज मीर को दो सहयोगियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया है। इसके अलावा संगठन के 600 से अधिक नेताओं और कार्यकर्ताओं को भी हिरासत में लिया गया है। बताया गया है कि सरकार ने पहले शौकत नवाज मीर की गिरफ्तारी में सूचना देने वालों के लिए एक करोड़ रुपये के इनाम की घोषणा की थी।

चंपत राय समेत तीन पर एफआईआर की मांग

जन जन विचार

... अयोध्या

राम मंदिर चढ़ावा चोरी प्रकरण ने नया राजनीतिक और कानूनी मोड़ ले लिया। फैजाबाद बार एसोसिएशन के सदस्य राम जन्मभूमि थाने पहुंचे और श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, ट्रस्ट सदस्य डॉ. अनिल मिश्रा तथा व्यवस्थापक गोपाल राव के विरुद्ध प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज करने की मांग करते हुए पुलिस को तहरीर सौंपी।

तहरीर सौंपने से पहले बार एसोसिएशन भवन में अधिवक्ताओं की बैठक हुई, जिसमें मामले की गंभीरता, मंदिर

के चढ़ावे की सुरक्षा तथा जवाबदेही पर विस्तार से चर्चा की गई। अधिवक्ताओं का कहना है कि यदि जांच में किसी स्तर पर लापरवाही या संलिप्तता सामने आती है तो कानून के अनुसार कार्रवाई होनी चाहिए।

इस बीच, चढ़ावा चोरी मामले की जांच कर रही विशेष जांच टीम (एसआईटी) को अपनी जांच पूरी करने के लिए 15 जुलाई तक अतिरिक्त समय दिया गया है। जांच एजेंसियां आरोपियों से पूछताछ, छापेमारी और वित्तीय लेन-देन की पड़ताल में जुटी हैं। अब तक लाखों रुपये की नकदी बरामद होने तथा कई अहम सुराग

मिलने का दावा किया गया है।

मामले ने राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक चर्चा छेड़ दी है। विपक्ष पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग कर रहा है, जबकि विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों का कहना है कि राम मंदिर जैसी आस्था के केंद्र से जुड़े प्रत्येक आर्थिक लेन-देन में पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

पुलिस ने तहरीर प्राप्त होने की पुष्टि की है। अब यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि प्रारंभिक जांच के बाद एफआईआर दर्ज होती है या नहीं। पूरे घटनाक्रम पर देशभर की निगाहें टिकी हुई हैं।

बदली आम आदमी की जेब का गणित

नई दिल्ली। नए महीने की शुरुआत के साथ ही देशभर में आम लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी और खर्चों को प्रभावित करने वाले कई महत्वपूर्ण बदलाव लागू हो गए हैं। एक ओर जहां कॉमर्शियल एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में औसतन 180 रुपये की कटौती कर होटल, रेस्तरां और छोटे कारोबारियों को राहत मिली है, वहीं पासपोर्ट शुल्क में 14 वर्ष बाद बढ़ोतरी, रेल में बिना टिकट यात्रा पर दोगुना जुर्माना और कारों की बढ़ी कीमतों ने उपभोक्ताओं की जेब पर अतिरिक्त बोझ डाल दिया है।

तेल विपणन कंपनियों ने 19 किलोग्राम वाले कॉमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम घटाए हैं। इससे होटल, ढाबों और कैटरिंग कारोबार की लागत कम होने की उम्मीद है, जिसका लाभ उपभोक्ताओं को भी मिल सकता है। हालांकि 14 किलोग्राम वाले घरेलू एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

सरकार ने पासपोर्ट बनवाने और री-इश्यू कराने की फीस में बढ़ोतरी लागू कर दी है। वहीं रेलवे ने बिना टिकट यात्रा पर न्यूनतम जुर्माना 250 रुपये से बढ़ाकर 500 रुपये कर दिया है, जिससे नियमों के उल्लंघन पर अब यात्रियों को अधिक भुगतान करना होगा।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

दर्द से कराहती...

मानिकी के अगले बाएं पैर में गंभीर विकृति है, जिससे उसकी चलने-फिरने की क्षमता बुरी तरह प्रभावित हो गई है। इसके अलावा वह संक्रमण, डिहाइड्रेशन,

कुपोषण, उम्रजनित समस्याओं और एक आंख की कमजोर दृष्टि जैसी कई स्वास्थ्य चुनौतियों से भी जूझ रही है।

मानिकी की मालकिन द्वारा सर्वोच्च न्यायालय की समिति से अनुरोध किए जाने के बाद, संबंधित प्राधिकारों तथा असम और गुजरात

सरकारों की अनुमति मिलने पर उसका स्थानांतरण संभव हो सका। वनतारा में उसे दर्द निवारण, उन्नत पशु चिकित्सा, एक्जूपंक्टर, हाइड्रोथेरेपी, संतुलित पोषण तथा घावों की विशेषज्ञ देखभाल उपलब्ध कराई जाएगी। उसके लिए प्राकृतिक वातावरण, मुलायम मिट्टी, जलाशयों

और अन्य हाथियों के साथ रहने की व्यवस्था भी की गई है, जिससे वह तनावमुक्त होकर सामान्य जीवन की ओर लौट सके।

वनतारा, जिसकी स्थापना उद्योगपति अनंत अंबानी की पहल पर की गई है, घायल, बीमार और संकटग्रस्त वन्यजीवों के बचाव,

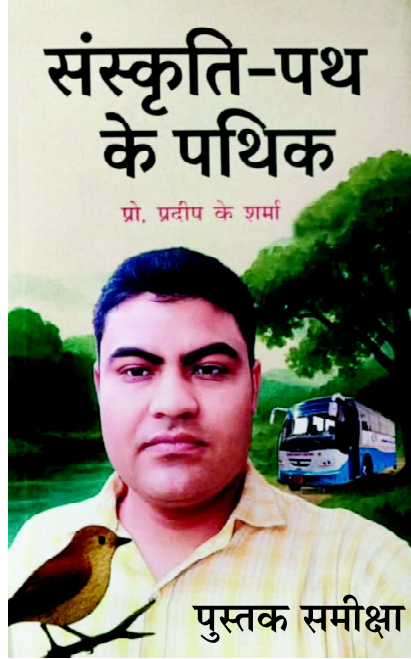
उपचार और पुनर्वास के लिए समर्पित एक विशेष संरक्षण केंद्र है। मानिकी की यह यात्रा केवल एक हथिनी के उपचार की कहानी नहीं, बल्कि यह संदेश भी देती है कि समय पर मानवीय हस्तक्षेप और संवेदनशील निर्णय किसी भी जीव को नया जीवन दे सकते हैं।

संस्कृति-पथ के पथिक और विकास लांबा

जन जन विचार

... डॉ. मुकेश कुमार

भारतीय संस्कृति केवल ग्रंथों, मंदिरों, तीर्थों और ऐतिहासिक स्थलों में ही नहीं बसती, बल्कि वह उन लोगों के जीवन और व्यवहार में भी दिखाई देती है जो अपने कर्तव्य को निष्ठा, विनम्रता और संवेदनशीलता के साथ निभाते हैं। जब कोई व्यक्ति अपने व्यवहार से दूसरों के जीवन को स्पर्श करता है, तब वह स्वयं संस्कृति का वाहक बन जाता है। प्रो. प्रदीप के शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक 'संस्कृति-पथ के पथिक' इसी सत्य को अत्यंत सहज और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। यह केवल एक यात्रा-वृत्तान्त या संस्मरण नहीं है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना, मानवीय मूल्यों और जीवन-दृष्टि का जीवंत दस्तावेज है। पुस्तक का केंद्र एक साधारण-सा दिखाई देने वाला व्यक्ति है जो सीटीयू का परिचालक विकास लांबा। किंतु लेखक ने अपने अनुभवों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि साधारण दिखने वाले लोग भी असाधारण मानवीय गुणों के कारण समाज के लिए प्रेरणा बन सकते हैं। यह पुस्तक आठ यात्राओं के अनुभवों पर आधारित है। इन यात्राओं में वृंदावन, बैजनाथ, नैनीताल, देवभूमि हिमाचल, अयोध्या, ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयागराज और अन्य सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थलों का वर्णन मिलता है। इन स्थानों का महत्व केवल धार्मिक या पर्यटन की दृष्टि से नहीं है, बल्कि ये भारतीय सभ्यता, संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा के प्रतिनिधि केंद्र हैं। लेखक इन यात्राओं के माध्यम से पाठक को भारत की सांस्कृतिक विविधता, धार्मिक आस्था, प्राकृतिक सौंदर्य और राष्ट्रीय एकता का अनुभव कराते हैं। किंतु इन समस्त यात्राओं के बीच एक ऐसा सूत्र है जो सभी को जोड़ता है, और वह है विकास लांबा का व्यक्तित्व, जो एक बस परिचालक है। सामान्यतः परिचालक का कार्य यात्रियों के टिकट बनाना, यात्रा की व्यवस्था संभालना और बस संचालन में सहयोग देना माना जाता है। लेकिन इस पुस्तक में वह केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि यात्रियों के मार्गदर्शक, सहयोगी, मित्र और संवेदनशील सहयात्री के रूप में उभरकर सामने आते हैं। उनका व्यवहार यह बताता है कि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता; उसे करने वाले की निष्ठा और दृष्टिकोण ही उसे महान बनाता है। पुस्तक में वर्णित यात्राओं के दौरान उनका व्यवहार यात्रियों के प्रति अत्यंत विनम्र और आत्मीय दिखाई देता है। वे यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखते हैं, उनकी समस्याओं को समझते हैं और हर संभव सहायता के लिए तत्पर रहते हैं। आज के समय में जब स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ती जा रही है, तब ऐसा व्यवहार समाज के लिए प्रेरणादायक है। उनका व्यक्तित्व हमें यह सिखाता है कि संवेदनशीलता और मानवता किसी भी व्यक्ति की सबसे बड़ी पूंजी होती है। वृंदावन की यात्रा का वर्णन करते हुए लेखक केवल



धार्मिक वातावरण का चित्रण नहीं करते, बल्कि उस आध्यात्मिक अनुभूति को भी सामने लाते हैं जो भारतीय संस्कृति की आत्मा है। श्रीकृष्ण की लीला-स्थली वृंदावन में भक्ति, प्रेम और समर्पण का वातावरण दिखाई देता है। इस यात्रा के दौरान विकास लांबा यात्रियों के लिए केवल एक परिचालक नहीं रहते, बल्कि ऐसे सहयात्री बन जाते हैं जो सभी को सहजता और अपनत्व का अनुभव कराते हैं। उनकी यह भूमिका यात्रा को केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने की प्रक्रिया न बनाकर एक सांस्कृतिक अनुभव में बदल देती है। नैनीताल की यात्रा प्रकृति और सौंदर्य का अद्भुत संसार प्रस्तुत करती है। पर्वतों, झीलों और हरियाली के बीच लेखक को भारत की प्राकृतिक धरोहर का अनुभव होता है। इस यात्रा में भी उनका अनुशासित और सहयोगी व्यवहार यात्रियों को सुरक्षा और विश्वास का अनुभव कराता है। यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि पर्यटन और यात्रा केवल दर्शनीय स्थलों को देखने तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसमें साथ चलने वाले लोगों का व्यवहार भी यात्रा की स्मृतियों को आकार देता है। देवभूमि हिमाचल का वर्णन भारतीय संस्कृति और प्रकृति के अद्भुत संगम को सामने लाता है। हिमालय की गोद में बसे मंदिर, नदियां और पर्वत भारतीय आध्यात्मिक परंपरा के प्रतीक हैं। यहां लेखक अनुभव करते हैं कि भारत की संस्कृति केवल पुस्तकों में नहीं, बल्कि जनजीवन में जीवित है। विकास लांबा का व्यवहार इस सांस्कृतिक चेतना को और अधिक अर्थपूर्ण बना देता है। वे यात्रियों के प्रति जिस धैर्य और सम्मान का परिचय देते हैं, वह भारतीय संस्कृति के मूल मूल्यों, सेवा, सहिष्णुता और सद्भाव का प्रत्यक्ष उदाहरण है। अयोध्या की यात्रा विशेष रूप से राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना से जुड़ी हुई है। भगवान राम की जन्मभूमि केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि भारतीय समाज के आदर्शों और मूल्यों का प्रतीक है। मर्यादा, त्याग, कर्तव्य और लोकमंगल की भावना भारतीय संस्कृति में राम के माध्यम से प्रतिष्ठित हुई है। लेखक जब अयोध्या की यात्रा का वर्णन करते हैं तो उसके साथ-साथ

परिचालक के व्यक्तित्व में भी इन्हीं मूल्यों की झलक दिखाई देती है। उनका कर्तव्यनिष्ठ व्यवहार यह संदेश देता है कि आदर्श केवल इतिहास या धर्मग्रंथों तक सीमित नहीं हैं; वे आज भी हमारे जीवन में जीवित रह सकते हैं। ऋषिकेश और हरिद्वार की यात्राएं भारतीय अध्यात्म, योग और गंगा संस्कृति का परिचय कराती हैं। गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारतीय जीवन का प्रतीक है। उसके तट पर विकसित सभ्यता ने भारतीय संस्कृति को गहराई प्रदान की है। इन यात्राओं में लेखक को आध्यात्मिक शांति और सांस्कृतिक गौरव का अनुभव होता है। इसी बीच विकास लांबा का संयमित और सेवाभावी स्वभाव इस अनुभव को और अधिक समृद्ध बना देता है। वे यात्रियों की आवश्यकताओं को समझते हैं और बिना किसी अपेक्षा के उनकी सहायता करते हैं। यह भावना भारतीय संस्कृति के 'सेवा परमोधर्मः' सिद्धांत को चरितार्थ करती है। प्रयागराज की यात्रा भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम केवल नदियों का संगम नहीं, बल्कि विविध परंपराओं, विचारों और संस्कृतियों का भी संगम है। लेखक इस यात्रा के माध्यम से भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी भावना को रेखांकित करते हैं। परिचालक का व्यवहार भी इसी समन्वय का उदाहरण है। वे सभी यात्रियों के साथ समान व्यवहार करते हैं और किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते। यह गुण आज के समाज में अत्यंत आवश्यक है। पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें एक साधारण कर्मचारी को असाधारण मानवीय मूल्यों के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। विकास लांबा का चरित्र युवाओं के लिए विशेष रूप से प्रेरणादायक है। आज का युवा वर्ग अनेक चुनौतियों और आकर्षणों के बीच अपना मार्ग खोज रहा है। ऐसे समय में उनका व्यक्तित्व यह संदेश देता है कि सफलता केवल ऊंचे पद प्राप्त करने में नहीं, बल्कि अपने कार्य को ईमानदारी, संवेदनशीलता और समर्पण के साथ करने में है। उनकी विनम्रता यह सिखाती है कि व्यक्ति का वास्तविक सम्मान उसके पद से नहीं, बल्कि उसके व्यवहार से मिलता है। उनकी संवेदनशीलता यह बताती है कि दूसरों की समस्याओं को समझना और उनकी सहायता करना मानवता का सबसे बड़ा गुण है। उनका अनुशासन यह प्रेरणा देता है कि कर्तव्यनिष्ठ जीवन की सफलता का आधार है तथा सहयोगी स्वभाव यह संदेश देता है कि समाज में सद्भाव और एकता बनाए रखने के लिए परस्पर सहयोग आवश्यक है। पुस्तक का एक व्यापक उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करना भी है। जिन स्थलों की यात्राओं का वर्णन इसमें किया गया है, वे भारत की सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्राओं के माध्यम से लेखक यह अनुभव कराते हैं कि विविधताओं के बावजूद भारत की आत्मा एक है। भाषा, वेशभूषा, खान-पान और रीति-रिवाजों में

भिन्नता होने पर भी भारतीय संस्कृति सबको एक सूत्र में बांधती है। विकास लांबा का व्यक्तित्व इसी राष्ट्रीय एकता का मानवीय रूप है।

यह पुस्तक ज्ञान, भक्ति और संवेदनशीलता के त्रिवेणी-संगम का सुंदर उदाहरण है। ज्ञान हमें अपने अतीत, संस्कृति और समाज को समझने की दृष्टि देता है। भक्ति हमें आत्मिक शांति और नैतिक शक्ति प्रदान करती है। संवेदनशीलता हमें दूसरों के दुख-सुख से जोड़ती है। इन तीनों मूल्यों का समन्वय ही एक आदर्श नागरिक और श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण करता है। विकास लांबा का जीवन और व्यवहार इन मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति है। आज जब समाज में भौतिक उपलब्धियों को सफलता का प्रमुख मानदंड माना जाने लगा है, तब यह पुस्तक हमें याद दिलाती है कि मानवीय मूल्य ही जीवन की वास्तविक संपत्ति हैं। विनम्रता, सेवा, सहयोग, संवेदनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुण व्यक्ति को समाज में सम्मान दिलाते हैं और उसे सच्चे अर्थों में सफल बनाते हैं। उनका का चरित्र इसी सत्य का प्रमाण है।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि 'संस्कृति-पथ के पथिक' केवल यात्रा संस्मरण नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना और मानवीय मूल्यों की यात्रा है। प्रो. प्रदीप के शर्मा ने अपनी सहज और संवेदनशील लेखनी के माध्यम से यह दिखाया है कि जीवन के साधारण अनुभव भी असाधारण प्रेरणा का स्रोत बन सकते हैं। सीटीयू परिचालक विकास लांबा जैसे व्यक्तित्व हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है और वह हमारे व्यवहार, संवेदनाओं तथा कर्तव्यनिष्ठ जीवन में दिखाई देती है। यह पुस्तक विशेष रूप से युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है, क्योंकि यह उन्हें ज्ञान, भक्ति, सेवा, संवेदनशीलता, मानवता और राष्ट्रप्रेम के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। वास्तव में विकास लांबा केवल एक बस परिचालक नहीं, बल्कि संस्कृति-पथ के ऐसे पथिक हैं जो अपने व्यवहार से समाज को बेहतर और अधिक मानवीय बनाने का संदेश देते हैं और यही मानवता उनके व्यक्तित्व में झलकती है। देखिए, 'साधारण कर्म में असाधारण संस्कृति की अभिव्यक्ति ही 'संस्कृति-पथ के पथिक' पुस्तक का मूल संदेश है।

लेखक प्रो. प्रदीप के शर्मा ने सीटीयू बस की एक सामान्य-सी यात्रा को अपने संवेदनशील दृष्टिकोण से असाधारण साहित्यिक संस्मरण का रूप प्रदान किया है। परिचालक विकास लांबा के विनम्र, कर्तव्यनिष्ठ और मानवीय व्यवहार को शब्दों में अंकित कर उन्होंने न केवल साहित्य की मानवीय परंपरा को समृद्ध किया है, बल्कि एक प्रकार का पुण्यकर्म भी संपन्न किया है। यह यात्रा संस्मरण आज के युवा वर्ग के लिए भी प्रेरणास्रोत है, जो यह संदेश देता है कि सच्ची महानता पद या प्रतिष्ठा में नहीं, बल्कि अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा, सद्व्यवहार और मानवीय संवेदनाओं में निहित होती है।

बेलफास्ट में टूटा 'मेन इन ब्ल्यू' का अभेद्य किला

जन जन विचार

...बेलफास्ट

विश्व क्रिकेट में बड़ा उलटफेर देखने को मिला। दो बार की मौजूदा टी-20 विश्व चैंपियन भारतीय टीम को आयरलैंड ने लगातार दूसरे मुकाबले में भी मात देकर दो मैचों की टी-20 अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला 2-0 से अपने नाम कर ली। इसके साथ ही आयरलैंड ने भारत के खिलाफ किसी भी प्रारूप में पहली बार द्विपक्षीय श्रृंखला जीतकर इतिहास रच दिया।

बेलफास्ट के सिविल सर्विस क्रिकेट क्लब मैदान पर खेले गए दूसरे मुकाबले में भारत को जीत के लिए 155 रन का लक्ष्य मिला था। लेकिन भारतीय बल्लेबाजी अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर सकी और पूरी टीम 153 रन ही बना सकी। रोमांचक मुकाबले में भारत को एक रन से हार का सामना करना पड़ा।

यह श्रृंखला भारतीय टीम के नए कप्तान श्रेयस अय्यर के लिए निराशाजनक शुरुआत साबित हुई। उनकी कप्तानी में भारत को दोनों मुकाबलों में हार झेलनी पड़ी और टीम एक भी मैच जीतने में सफल नहीं हो सकी।

मुकाबले के अंतिम ओवरों में हर्षित राणा ने केवल 10 गेंदों में 21 रनों की तेजतर्रार पारी खेलकर भारतीय खेमे में जीत की उम्मीद जगाई। हालांकि, बड़ी हिट लगाने के प्रयास में वह दूसरी अंतिम गेंद पर कैच आउट हो गए। अंतिम गेंदों में भारत लक्ष्य तक नहीं पहुंच सका और आयरलैंड ने ऐतिहासिक



जीत दर्ज कर ली।

यह हार कई मायनों में भारतीय क्रिकेट के लिए झटका मानी जा रही है। पिछले सात वर्षों में पहली बार भारत किसी टी-20 अंतर्राष्ट्रीय श्रृंखला में क्लीन स्वीप का शिकार हुआ है। इससे पहले 2019 में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 2-0 से हराया था। वहीं, 2023 में वेस्टइंडीज ने भारत को 3-2 से श्रृंखला हराई थी। उसके बाद भारत लगातार 16 टी-20 श्रृंखलाओं और टूर्नामेंटों में अजेय रहा था,

जिसमें दो टी-20 विश्व कप खिताब भी शामिल हैं।

कुछ वर्ष पहले तक भारत के खिलाफ जीत का इंतजार कर रही आयरलैंड की टीम ने पहले अपना पहला टी-20 मुकाबला जीता और फिर उसी दौर में श्रृंखला पर भी कब्जा कर लिया। यह उपलब्धि आयरलैंड क्रिकेट के इतिहास की सबसे बड़ी सफलताओं में गिनी जा रही है।

लगातार शानदार प्रदर्शन के बाद मिली

इस अप्रत्याशित हार ने भारतीय टीम प्रबंधन के सामने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। बल्लेबाजी की अस्थिरता, दबाव के क्षणों में रणनीतिक चूक और नए संयोजन की परीक्षा अब चर्चा का विषय बन गई है। दूसरी ओर, आयरलैंड ने अनुशासित गेंदबाजी, सधी हुई बल्लेबाजी और बेहतरीन क्षेत्ररक्षण के दम पर साबित कर दिया कि अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में किसी भी टीम को हल्के में नहीं लिया जा सकता।

वैभव सूर्यवंशी के पदार्पण पर बना रहस्य, फैंस बेकरार

जन जन विचार

...नई दिल्ली

आयरलैंड के हाथों टी-20 श्रृंखला में मिली अप्रत्याशित हार के बाद अब भारतीय क्रिकेट दल की निगाहें इंग्लैंड के विरुद्ध होने वाली पांच मैचों की टी-20 श्रृंखला पर टिकी हैं। लेकिन पहले मुकाबले से पहले सबसे अधिक चर्चा किसी रणनीति या अभ्यास की नहीं, बल्कि 15 वर्षीय युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी के संभावित अंतर्राष्ट्रीय पदार्पण को लेकर हो रही है।

हाल ही में घरेलू क्रिकेट और इंडियन प्रीमियर लीग में शानदार प्रदर्शन के बाद भारतीय दल में शामिल किए गए वैभव सूर्यवंशी को आयरलैंड दौर के दोनों मुकाबलों में अंतिम एकादश में स्थान नहीं मिला था। इसके बाद क्रिकेट प्रेमियों और खेल विशेषज्ञों ने चयन प्रक्रिया पर अनेक प्रश्न उठाए।

इसी विषय पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में जब भारतीय कप्तान श्रेयस अय्यर से सवाल पूछा गया कि क्या सामाजिक माध्यमों पर चल रही चर्चाओं का दल पर कोई प्रभाव पड़ा है, तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वह सामाजिक माध्यमों पर होने वाली बहसों पर ध्यान नहीं देते। उन्होंने कहा कि



उनका पूरा ध्यान केवल खेल और दल की तैयारी पर रहता है।

जब उनसे वैभव सूर्यवंशी के पदार्पण की संभावना के बारे में पूछा गया, तब भी कप्तान ने कोई स्पष्ट उत्तर देने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि दल की रणनीति सार्वजनिक नहीं की जा

सकती और अंतिम एकादश का निर्णय परिस्थितियों तथा टीम प्रबंधन की योजना के अनुसार लिया जाएगा।

कप्तान के इस बयान के बाद खेल जगत में नई बहस छिड़ गई है। कुछ लोगों का मानना है कि उन्होंने अनावश्यक विवाद से बचने के लिए

संतुलित उत्तर दिया, जबकि कुछ का कहना है कि युवा खिलाड़ियों को लेकर अधिक स्पष्टता होनी चाहिए।

इस बीच, पूर्व भारतीय क्रिकेटर श्रीवत्स गोस्वामी ने भी इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि अंतिम एकादश का निर्णय पूरी तरह टीम प्रबंधन का अधिकार है। बाहरी चर्चाओं के बजाय खिलाड़ियों को अपने प्रदर्शन पर ध्यान देना चाहिए।

आयरलैंड के विरुद्ध 0-2 से मिली हार के बाद भारतीय दल पर दबाव बढ़ गया है। ऐसे में इंग्लैंड के विरुद्ध होने वाली श्रृंखला केवल जीत-हार तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह भी देखा जाएगा कि युवा प्रतिभाओं को अवसर देने के मामले में टीम प्रबंधन कितना साहस दिखाता है।

अब पूरे देश की निगाहें पहले मुकाबले पर हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या वैभव सूर्यवंशी को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण का अवसर मिलेगा या उन्हें अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

देश ही नहीं दुनिया के क्रिकेटप्रेमी और यहां तक के दिग्गज भी वैभव सूर्यवंशी को अंतर्राष्ट्रीय मैचों में खेलते देखना चाहते हैं। सुनील गावस्कर तक ने स्पष्ट कह दिया है कि बिना देर किए वैभव सूर्यवंशी को मौका देना चाहिए।

कामाख्या धाम पहुंचीं उर्फी जावेद, तस्वीरें वायरल

आस्था की तस्वीरों ने फिर छेड़ी धर्म परिवर्तन की बहस

जन जन विचार

... गुवाहाटी

अपने अनोखे फैशन और बेबाक अंदाज के लिए चर्चित सोशल मीडिया स्टार एवं अभिनेत्री उर्फी जावेद इस बार किसी अलग पहनावे के कारण नहीं, बल्कि असम के विश्वप्रसिद्ध कामाख्या देवी मंदिर में दर्शन-पूजन को लेकर सुर्खियों में हैं। मंदिर परिसर से साझा की गई उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं और लाखों लोग उन्हें देख रहे हैं।

तस्वीरों में उर्फी जावेद हरे रंग के पारंपरिक सूट में नजर आ रही हैं। उनके सिर पर लाल-गुलाबी चुनरी है और माथे पर तिलक लगा हुआ है। एक तस्वीर में वह मंदिर के मुख्य परिसर के सामने हाथ जोड़कर माता के दर्शन करती दिखाई देती हैं, जबकि दूसरी तस्वीर में दीप प्रज्ज्वलित कर पूजा-अर्चना करती नजर आती हैं। उन्होंने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया मंच पर इन तस्वीरों को साझा करते हुए

लिखा कि उन्हें गुवाहाटी स्थित कामाख्या देवी मंदिर के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

तस्वीरें सामने आते ही सोशल मीडिया पर एक बार फिर उनके धर्म परिवर्तन को लेकर चर्चाएं शुरू हो गईं। कुछ लोगों ने पुराने दावों को दोहराते हुए कहा कि उर्फी ने कथित रूप से अपना धर्म बदल लिया है। इससे पहले भी इंटरनेट पर यह अफवाह फैली थी कि उन्होंने अपना नाम बदलकर 'रीता भारद्वाज' रख लिया है।

हालांकि, उर्फी जावेद ने इन सभी दावों को स्पष्ट रूप से खारिज किया है। उन्होंने कहा कि उनका नाम नहीं बदला है और सोशल मीडिया पर फैल रही ऐसी खबरें पूरी तरह झूठी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वह किसी एक धर्म की सीमाओं में खुद को नहीं बांधती और सभी आस्थाओं का सम्मान करती हैं।

उर्फी की इन तस्वीरों पर प्रशंसकों ने उनकी सादगी और पारंपरिक रूप की सराहना की है। वहीं कुछ लोगों ने इसे उनकी निजी



उर्फी की कामाख्या यात्रा

कामाख्या देवी मंदिर में किए दर्शन। पारंपरिक परिधान, चुनरी और तिलक वाली तस्वीरें हुई वायरल। सोशल मीडिया पर फिर उठी धर्म परिवर्तन की चर्चा। अभिनेत्री ने नाम बदलने और धर्म परिवर्तन की खबरों को बताया झूठ। कहा-मैं सभी आस्थाओं का सम्मान करती हूं, लेकिन अफवाहों पर विश्वास न करें।

आस्था का विषय बताते हुए अनावश्यक विवाद न खड़ा करने की अपील की। दूसरी ओर, कुछ सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने धर्म परिवर्तन से जुड़ी पुरानी अफवाहों को फिर हवा देने की कोशिश की, जिसे अभिनेत्री पहले ही निराधार बता चुकी हैं।

नीलाचल पर्वत पर स्थित कामाख्या देवी मंदिर देश के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु और अनेक फिल्मी हस्तियां यहां दर्शन के लिए पहुंचती हैं। हाल ही में संपन्न अंबुवासी महापर्व के बाद श्रद्धालुओं का यहां लगातार आगमन जारी है।

बेटी की शादी में खूब नाचे 'तारक मेहता'

'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में तारक मेहता का किरदार निभाने वाले शैलेश लोढ़ा की बेटी स्वरा की हाल ही शादी हुई। शादी बेहद निजी तरीके से हुई, और अब उसकी तस्वीरें और वीडियो सामने आए हैं। स्वरा की शादी में कैफी और हमजा शबरी ने परफॉर्म किया था, और उन्होंने वीडियोज सोशल मीडिया पर शेयर किए हैं। यह शादी बांद्रा स्थित ताज लैंड्स एंड होटल में हुई थी। वायरल वीडियोज देख यूजर्स ने शैलेश लोढ़ा से जेठालाल के बारे में पूछना शुरू कर दिया। बेटी स्वरा की शादी में शैलेश लोढ़ा भी गाते और डांस करते नजर आए। उन्होंने जमकर इंजॉय किया। सामने वीडियोज आए, तो फैस अपनी एक्साइटमेंट रोक नहीं सके, पर जेठालाल के बारे में पूछने से भी नहीं चूके। एक फैन ने लिखा, 'जेठालाल कहां है?' एक और ने लिखा, 'दोस्ती का गाना, पर जेठालाल गायब है।' एक फैन बोला, 'दिलीप जोशी को भी यहीं होना चाहिए था।'

क्यों छोड़ा था 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा'

शैलेश लोढ़ा ने साल 2022 में 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' छोड़ दिया था। वह 14 साल तक इस शो का हिस्सा रहे। बाद में उनकी जगह एक्टर सचिन श्रॉफ ने ली। शैलेश लोढ़ा ने 'द लल्लनटॉप' को दिए इंटरव्यू में 'तारक मेहता' छोड़ने की वजह बताई थी। उन्होंने कहा था कि प्रोड्यूसर असित मोदी ने उनसे गलत तरीके से बात की थी। साथ ही जब पता चला कि वह दूसरे शो का हिस्सा बन रहे हैं, तो उनकी बेइज्जती की थी। शैलेश ने बताया था कि सब टीवी के एक स्टैंड अप शो 'गुड नाइट इंडिया' का हिस्सा बनने पर असित मोदी ने उन्हें फोन किया और असभ्य भाषा का इस्तेमाल किया था। यह उनसे बर्दाश्त नहीं हुआ।

GAURANSHI INDUSTRIES

Purity in Every Drop, Nature in Every Product.

100% NATURAL

PURE NATURAL GOODNESS

MAKHANA (FOX NUT SUPERFOOD) 200gm

ASSAM CTC TEA 250gm

ASSAM CTC TEA 100gm

TEA

NAME	MAKHANA (FOX NUT SUPERFOOD)	ASSAM CTC TEA	ASSAM CTC TEA
SIZE	200gm	250gm	100gm

HONEY

MORINGA HONEY 200gm

TULSI HONEY 200gm

MUSTARD HONEY 200gm

LITCHI HONEY 200gm

WILD FOREST HONEY 200gm

RAW & UNPROCESSED

PURE & NATURAL

DIRECTLY FROM OUR FARMS

TRUSTED BY THOUSANDS

3rd Floor, IIT Road, Jayguru, Amingaon, Kamrup, Assam - 781031, India

Contact : +91-88224 20619

E-Mail : gauranshiind@gmail.com
www.gauranshiindustries.com

ৰাজ্যৰ বাহিৰত জীৱিকাৰ সন্ধান, কিন্তু সুৰক্ষা কত ?

প্ৰজননশীল শ্ৰমিকৰ তথ্যভঁৰালৰ অভাৱে বাঢ়িছে দুৰ্ঘটনা, শোষণ আৰু মৃত্যুৰ আশংকা

জন জন বিচাৰ

...৫ গুৱাহাটী

অসমৰ পৰা প্ৰতিবছৰে হাজাৰ হাজাৰ যুৱক-যুৱতী জীৱিকাৰ সন্ধানত ৰাজ্যৰ বাহিৰলৈ ওলাই যায়। কোনোবাই নিৰ্মাণক্ষেত্ৰত, কোনোবাই উদ্যোগ-কাৰখানাত, আন কোনোবাই হোটেল-ৰেষ্টুৰেণ্ট বা সেৱা খণ্ডত কৰ্মসংস্থাপন বিচাৰে। কিন্তু দুখজনক সত্যটো হ'ল- তেওঁলোক ৰাজ্য এৰি ওলাই যোৱাৰ পিছত তেওঁলোক কত আছে, কেনে পৰিৱেশত কাম কৰিছে বা তেওঁলোকৰ সুৰক্ষাৰ দায়িত্ব কোনে লয়-তাৰ কোনো পূৰ্ণাংগ চৰকাৰী তথ্যভঁৰাল আজিও নাই।

শেহ তীয়াকৈ সংঘটিত কেইবাটাও ঘটনাই এই উদ্বেগক পুনৰ উজাগৰ কৰি তুলিছে। ২১ জুনত তামিলনাডুৰ তিৰুভল্লুৰ জিলাৰ এখন সাগৰীয় খাদ্য প্ৰস্তুতকাৰী কাৰখানাত এমোনিয়া গেছ নিৰ্গমনৰ ঘটনাত অসমৰ দুগৰাকী মহিলাসহ নজন শ্ৰমিকৰ মৃত্যু হয়। ইয়াৰ কিছুদিন পূৰ্বে, ৯ জুনত অৰুণাচল প্ৰদেশৰ এখন নিৰ্মাণস্থলীৰ পৰা অসমৰ সাতজন মিহিং যুৱকক অমানৱীয় নিৰ্যাতন আৰু অনাহাৰৰ অৱস্থাৰ পৰা উদ্ধাৰ কৰা হৈছিল। এই দুয়োটা ঘটনাই একে প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে- ৰাজ্যৰ বাহিৰলৈ যোৱা শ্ৰমিকসকল কিমান সুৰক্ষিত ?

অৰ্থনৈতিক প্ৰয়োজনেই

প্ৰজননৰ মূল কাৰণ

বিশেষকৈ উজনি অসমৰ বহু পৰিয়াল কৃষিৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল।



কিন্তু কৃষিৰ আয়ে পৰিয়াল চলাবলৈ যথেষ্ট নোহোৱাৰ বাবে বহু যুৱকে কৰ্মসংস্থাপনৰ আশাত অৰুণাচল, কেৰালা, কৰ্ণাটক, তামিলনাডু, গুজৰাট, দিল্লী, মুম্বাই, বেংগালুৰু আদি ঠাইলৈ ৰাওনা হয়। এই সুযোগকে ভিত্তি কৰি অসাধু দালাল চক্ৰই অধিক দৰমহাৰ প্ৰলোভন দেখুৱাই বহু যুৱক-যুৱতীক বিপদসংকুল কৰ্মক্ষেত্ৰলৈ লৈ যায়।

তথ্যভঁৰাল নথকাটো

ডাঙৰ দুৰ্বলতা

সামাজিক সংগঠনসমূহৰ মতে, অসমৰ পৰা ৰাজ্যৰ বাহিৰলৈ যোৱা শ্ৰমিকসকলৰ কোনো কেন্দ্ৰীয় তথ্যভঁৰাল নথকাটো আটাইতকৈ ডাঙৰ সমস্যা। ফলত কোনো শ্ৰমিক নিখোজ হলে, দুৰ্ঘটনাত পতিত হলে বা শোষণৰ বলি হলে চৰকাৰীভাৱে

তেওঁলোকক বিচাৰি উলিওৱা বা সহায় আগবঢ়োৱাটো কঠিন হৈ পৰে।

এই পৰিপ্ৰেক্ষিতত টাকাম মিহিং পৰিণ কেবাং-এ এক উল্লেখযোগ্য পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰিছে। জুলাই মাহৰ পৰা অৰুণাচল প্ৰদেশলৈ কৰ্মসূত্ৰে যোৱা শ্ৰমিকসকলক সংগঠনটোৰ ওচৰত নাম পঞ্জীয়ন, প্ৰয়োজনীয় নথি দাখিল আৰু নিয়োগকৰ্তাৰ সৈতে লিখিত চুক্তি সম্পন্ন কৰাটো বাধ্যতামূলক কৰাৰ সিদ্ধান্ত লোৱা হৈছে। এই ব্যৱস্থাই শ্ৰমিকৰ কৰ্মস্থলী, দৰমহা আৰু নিয়োগকৰ্তাৰ তথ্য সংৰক্ষণ কৰি জবাবদিহিতা নিশ্চিত কৰাত সহায় কৰিব।

মৃত্যুৰ পিছত সহায় যথেষ্ট নহয়

২০২৫ চনত চেন্নাইৰ এনোৰ

তাপবিদ্যুৎ প্ৰকল্পত অসমৰ নজন শ্ৰমিকৰ মৃত্যুৰ পিছত অসম চৰকাৰে

শ্ৰদ্ধাঞ্জলি আঁচনি আৰম্ভ কৰে। এই আঁচনিৰ জৰিয়তে ৰাজ্যৰ বাহিৰত মৃত্যু হোৱা অসমবাসীৰ মৃতদেহ ঘৰলৈ অনাৰ ব্যৱস্থা কৰা হয়। বহু পৰিয়াল এই আঁচনিৰ পৰা উপকৃত হৈছে।

কিন্তু সমাজকৰ্মী আৰু শ্ৰমিক সংগঠন সমূহৰ মতে, মৃত্যু বা দুৰ্ঘটনাৰ পিছত সহায় আগবঢ়োৱাটো যথেষ্ট নহয়। দুৰ্ঘটনা বা শোষণৰ আগতেই শ্ৰমিকসকলক সুৰক্ষা প্ৰদান কৰিব পৰা এক শক্তিশালী ব্যৱস্থা গঢ়ি তোলাটো অধিক প্ৰয়োজন।

চাহ বাগিচাৰ যুৱসমাজো

একে সংকটত

অসম চাহ মজদুৰ সংঘইও বহুদিন ধৰি চাহ বাগিচাৰ পৰা যুৱক-যুৱতীৰ বাহিৰলৈ প্ৰব্ৰজনক লৈ উদ্বেগ প্ৰকাশ কৰি আহিছে। সংগঠনটোৰ মতে, বহু

যুৱক-যুৱতী মিছা প্ৰতিশ্ৰুতিৰ বলি হৈ অসংগঠিত খণ্ডত অতি কম মজুৰিত আৰু অসুৰক্ষিত পৰিৱেশত কাম কৰিবলৈ বাধ্য হৈছে।

সময়ৰ দাবী-এক সুসংগঠিত ব্যৱস্থা

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, সমস্যাৰ স্থায়ী সমাধানৰ বাবে কেইবাটাও পদক্ষেপ জৰুৰী-

- ৰাজ্যৰ বাহিৰলৈ যোৱা সকলো শ্ৰমিকৰ কেন্দ্ৰীয় তথ্যভঁৰাল প্ৰস্তুত কৰা।

- নিয়োগকাৰী আৰু দালাল সংস্থাৰ বাধ্যতামূলক পঞ্জীয়ন।

- আন্তঃৰাজ্য সমন্বয় ব্যৱস্থা শক্তিশালী কৰা।

- শ্ৰমিকসকলক আইনী অধিকাৰ, সুৰক্ষা আৰু কৰ্মচুক্তিৰ বিষয়ে সজাগ কৰা।

- জৰুৰীকালীন সহায়ৰ বাবে ২৪ ঘণ্টীয়া সহায়কেন্দ্ৰ স্থাপন।

কৰ্মসংস্থাপনৰ সন্ধানত ৰাজ্যৰ বাহিৰলৈ যোৱাটো আজিৰ অৰ্থনৈতিক বাস্তৱতা। কিন্তু জীৱিকাৰ সন্ধান জীৱনৰ সংকটত পৰিণত হব নালাগে। শ্ৰমিকসকলৰ সঠিক তথ্য সংৰক্ষণ, নিয়মীয়া নিৰীক্ষণ, দালাল চক্ৰৰ ওপৰত কঠোৰ নিয়ন্ত্ৰণ আৰু আন্তঃৰাজ্য সমন্বয় নিশ্চিত কৰিলেহে এই সমস্যা বহু পৰিমাণে নিয়ন্ত্ৰণ কৰিব পৰা যাব।

অসমৰ যুৱশক্তি ৰাজ্যৰ সম্পদ।

তেওঁলোকৰ সুৰক্ষা নিশ্চিত কৰাটো কেৱল চৰকাৰৰ দায়িত্ব নহয়; ই সমাজ, নিয়োগকৰ্তা আৰু প্ৰতিজন নাগৰিকৰো সমূহীয়া দায়িত্ব।

পখী : অসমৰ পক্ষীজগতৰ প্ৰথম ডিজিটেল ভঁৰাল

জন জন বিচাৰ

...৫ গুৱাহাটী

অসমৰ জৈৱ-বৈচিত্ৰৰ অন্যতম মূল্যবান সম্পদ হৈছে ইয়াৰ সমৃদ্ধ পক্ষীজগত। কাজিৰঙা, মানাহ, দিপৰ বিল, মাগুৰী বিল, ডিব্ৰু-ছৈখোৱা, নামেৰি আদি অভয়াৰণ্য আৰু জলাশয়সমূহ কেৱল ভাৰততেই নহয়, সমগ্ৰ বিশ্বৰ পক্ষীপ্ৰেমীসকলৰ আকৰ্ষণৰ কেন্দ্ৰবিন্দু। এই সমৃদ্ধ ঐতিহ্যক ডিজিটেল মাধ্যমত সংৰক্ষণ আৰু সাধাৰণ মানুহৰ ওচৰলৈ সহজভাৱে লৈ যোৱাৰ লক্ষ্যৰে গুৱাহাটীৰ দুগৰাকী প্ৰকৃতিপ্ৰেমীয়ে আৰম্ভ কৰিছে অসমৰ প্ৰথম ডিজিটেল পক্ষী-তথ্যভঁৰাল 'পখী'।



প্ৰযুক্তিৰ সহায়ত সংৰক্ষণ, গৱেষণা আৰু প্ৰকৃতি-সচেতনতাৰ নতুন দিগন্ত

'পখী' কেৱল এটা ৱেবছাইট বা তথ্যভঁৰালেই নহয়; ই অসমৰ পক্ষীসম্পদক চিনি পোৱা, অধ্যয়ন কৰা আৰু সংৰক্ষণৰ এক আধুনিক পদক্ষেপ। বৰ্তমান এই ডিজিটেল ভঁৰালত অসমৰ ৩৭২বিধ পক্ষীৰ বিস্তৃত তথ্য সন্নিবিষ্ট কৰা হৈছে। প্ৰতিটো পক্ষীৰ ক্ষেত্ৰত উচ্চমানৰ আলোকচিত্ৰ, বৈজ্ঞানিক পৰিচয়, বাসস্থান, চিনাক্তকৰণৰ বৈশিষ্ট্য আৰু ইংৰাজীৰ লগতে পৰম্পৰাগত অসমীয়া নামো সংযোজন কৰা হৈছে। ফলত বৈজ্ঞানিক তথ্য আৰু স্থানীয় জ্ঞানৰ মাজত এক সুন্দৰ সেতুবন্ধন গঢ়ি উঠিছে।

এতিয়ালৈকে অসমৰ

১০ পৃষ্ঠাত

আস্থা, আধ্যাত্মিকতা আৰু অসমৰ বিশ্বমুখী পৰিচয়

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

অম্বুবাচী মহাযোগ ২০২৬



নীলাচল পাহাৰৰ বুকুত অৱস্থিত শক্তিপীঠ মা কামাখ্যা দেৱালয়ত অনুষ্ঠিত অম্বুবাচী মহাযোগ কেৱল এটা ধৰ্মীয় অনুষ্ঠান নহয়; ই হৈছে ভাৰতীয় আধ্যাত্মিকতা, লোকবিশ্বাস, সংস্কৃতি আৰু সম্প্ৰীতিৰ এক অনন্য মহামিলন। ২০২৬ চনৰ অম্বুবাচী মহাযোগে পুনৰ এবাৰ প্ৰমাণ কৰিলে যে কামাখ্যা ধাম কেৱল অসমৰেই নহয়, সমগ্ৰ বিশ্বৰ ভক্তসকলৰ আস্থাৰ কেন্দ্ৰবিন্দু।

২২ জুনৰ নিশা অম্বুবাচী প্ৰবৃত্তিৰ আৰম্ভ হোৱা এই পৱিত্ৰ উৎসৱৰ সামৰণি পৰে ২৭ জুনত, যেতিয়া শুদ্ধিকৰণ, দেৱী স্নান আৰু নিত্য পূজাৰ অন্তত মন্দিৰৰ দুৱাৰ ভক্তসকলৰ বাবে মুকলি কৰা হয়। পুৱাৰ পৰাই মাৰ দৰ্শনৰ বাবে নিশাৰে পৰা শাৰী পাতি থকা লক্ষাধিক ভক্তৰ মুখত দেখা গল গভীৰ ভক্তি আৰু অপাৰ আনন্দ।

এইবাৰৰ অম্বুবাচী মহাযোগত মুঠ ৭,৯৬,৭৭৭ গৰাকী ভক্ত আৰু দৰ্শনাৰ্থীয়ে কামাখ্যা ধামত উপস্থিতি

জনায়। ইয়াৰে ৭৫ গৰাকী বিদেশী ভক্ত আছিল। ২০২৫ চনৰ তুলনাত এই সংখ্যা উল্লেখযোগ্যভাৱে বৃদ্ধি পাইছে। বিগত বৰ্ষত মুঠ

৭,৭২,০১৯ গৰাকী ভক্ত আৰু ৪২ গৰাকী বিদেশী দৰ্শনাৰ্থীয়ে মেলাত অংশগ্ৰহণ কৰিছিল। এই পৰিসংখ্যাই স্পষ্টকৈ দেখুৱাইছে যে কামাখ্যা

ধামৰ আকৰ্ষণ ক্ৰমাৎ আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় পৰ্যায়তো বৃদ্ধি পাইছে।

অসম চৰকাৰৰ পৰ্যটন বিভাগে ২০১৩ চনৰ পৰা অম্বুবাচী মহাযোগৰ আনুষ্ঠানিক আয়োজন কৰি আহিছে। সুসংগঠিত ব্যৱস্থাপনা, উন্নত পৰিকাঠামো, চিকিৎসা, পৰিষ্কাৰ-পৰিচ্ছন্নতা, নিৰাপত্তা, পানীয় জল আৰু স্নেচ্ছাসেৱী সংগঠনৰ সমন্বিত প্ৰচেষ্টাই এই বিশাল মেলাক অধিক সুশৃংখল আৰু সফল ৰূপ দিছে। লাখ লাখ ভক্তৰ উপস্থিতিৰ মাজতো শান্তিপূৰ্ণভাৱে অনুষ্ঠান সম্পন্ন হোৱাটো এক উল্লেখযোগ্য সফলতা।

পৰ্যটন মন্ত্ৰী অজন্তা নেওগে ভক্তৰ সংখ্যা বৃদ্ধি পোৱাত সন্তোষ প্ৰকাশ কৰি কয় যে অম্বুবাচী মহাযোগে ভাৰতীয় সংস্কৃতিৰ 'অতিথি দেৱো ভৱ' আদৰ্শক বাস্তৱ ৰূপত প্ৰতিফলিত কৰিছে। তেওঁৰ মতে, এই উৎসৱে কেৱল ধৰ্মীয়

বিশ্বাসকেই শক্তিশালী নকৰে, বৰঞ্চ অসমক বিশ্বৰ আধ্যাত্মিক পৰ্যটনৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ গন্তব্যস্থান হিচাপেও প্ৰতিষ্ঠা কৰি আহিছে।

অম্বুবাচী মেলাৰ এক বিশেষ দিশ হৈছে ইয়াত একেলগে দেখা পোৱা বৈচিত্ৰ্য। সাধু-সন্ন্যাসী, তাত্ত্বিক, গৃহস্থ ভক্ত, গৱেষক, বিদেশী পৰ্যটক, আলোকচিত্ৰশিল্পী আৰু বিভিন্ন সংস্কৃতিৰ মানুহে একে স্থানত মিলিত হয়। এই বৈচিত্ৰ্যই কামাখ্যাক কেৱল ধৰ্মীয় ক্ষেত্ৰতে সীমাবদ্ধ নাৰাখি, এক বৃহৎ সাংস্কৃতিক আৰু সামাজিক মঞ্চলৈ ৰূপান্তৰিত কৰিছে।

আধ্যাত্মিকতাৰ উপৰিও এই মেলাই অসমৰ অৰ্থনীতি আৰু পৰ্যটন খণ্ডতো ইতিবাচক প্ৰভাৱ পেলায়। হোটেল, অতিথিশালা, পৰিবহণ, ক্ষুদ্ৰ ব্যৱসায়, হস্তশিল্প, স্থানীয় খাদ্য ব্যৱসায়ী আৰু অসংখ্য ক্ষুদ্ৰ উদ্যোগীয়ে এই সময়ছোৱাত উল্লেখযোগ্য আয় লাভ কৰে। সেয়েহে অম্বুবাচী মহাযোগক অসমৰ আধ্যাত্মিক পৰ্যটনৰ এক শক্তিশালী অৰ্থনৈতিক চালিকাশক্তি বুলিও কোৱা যায়।

পৃষ্ঠাৰ ৯ পৰা

বাজেটৰ সফলতা কেৱল ঘোষণা নহয়...

পক্ষীপ্ৰেমী বা গৱেষকসকলে মূলতঃ ৰাষ্ট্ৰীয় বা আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় গাইডৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰিবলগীয়া হৈছিল। সেই গ্ৰন্থসমূহত অসমৰ স্থানীয় নাম, লোকবিশ্বাস অথবা উদ্ভাৱ-পূৰ্বাঞ্চলৰ বিশেষ পক্ষীসমূহৰ বিষয়ে বিস্তৃত তথ্য প্ৰায়েই অনুপস্থিত আছিল। এই অভাৱ পূৰণৰ ক্ষেত্ৰত 'পখী' এক যুগান্তকাৰী সংযোজন বুলি বিশেষজ্ঞসকলে অভিহিত কৰিছে।

অসমক প্ৰকৃতিয়ে অপূৰ্ব জৈৱ-বৈচিত্ৰ্য দান কৰিছে। ৰাজ্যখন মধ্য এছিয়া-ভাৰত অভিবাসী পক্ষীপথৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ অংশ। শীতকালত বহু দূৰ দেশৰ পৰা হাজাৰ হাজাৰ পৰিভ্ৰমী পক্ষী অসমলৈ আহে। আনহাতে বহু দুপ্ৰাপ্য আৰু বিপন্ন প্ৰজাতিৰ পক্ষীয়েও অসমক স্থায়ী বাসস্থান হিচাপে বাছি লৈছে। কিন্তু বনাঞ্চল ধ্বংস, জলাশয় সংকোচন, জলবায়ু পৰিৱৰ্তন আৰু মানুহৰ হস্তক্ষেপৰ ফলত বহু প্ৰজাতি সংকটৰ সন্মুখীন হৈছে। এনে সময়ত পক্ষীৰ বিষয়ে সঠিক তথ্য আৰু জনসচেতনতা গঢ়ি তোলা সংৰক্ষণৰ অন্যতম মূল চাবিকাঠি।

'পখী'ৰ আন এক উল্লেখযোগ্য দিশ হৈছে নাগৰিক-ভিত্তিক বিজ্ঞান (Citizen Science)-ক উৎসাহিত কৰাৰ প্ৰয়াস। ভৱিষ্যতে এই প্লেটফৰ্মত সাধাৰণ মানুহে নিজে দেখা পক্ষীৰ তথ্য, আলোকচিত্ৰ আৰু পৰ্যবেক্ষণ যোগান ধৰিব পাৰিব। ইয়াৰ জৰিয়তে পক্ষীৰ বিস্তৃতি, সংখ্যা আৰু আচৰণ সম্পৰ্কীয় মূল্যবান তথ্য সংগ্ৰহ হ'ব, যি গৱেষণা আৰু সংৰক্ষণৰ ক্ষেত্ৰত বিশেষ সহায়ক হ'ব।

শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰতো এই ডিজিটেল ভঁৰালৰ গুৰুত্ব অপৰিসীম। বিদ্যালয়-মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে

পৰিৱেশ শিক্ষা, জীৱবিজ্ঞান আৰু প্ৰকৃতি অধ্যয়নৰ বাবে সহজে এই তথ্য ব্যৱহাৰ কৰিব পাৰিব। একেদৰে পৰ্যটন উদ্যোগৰ বাবেও 'পখী' এক ফলপ্ৰসূ মঞ্চ হ'ব পাৰে। অসমৰ ক্ৰমবৰ্ধমান পক্ষী পৰ্যটন (Bird Tourism) উদ্যোগত এই প্লেটফৰ্মে দেশ-বিদেশৰ পক্ষীপ্ৰেমীসকলক সহায় কৰাৰ সম্ভাৱনা আছে।

'পখী'ৰ উদ্যোক্তাসকলে ভৱিষ্যতে আৰু অধিক পক্ষী সংযোজন, পক্ষীৰ মাতৰ শব্দভঁৰাল, বিস্তৃতিৰ মানচিত্ৰ, পৰ্যবেক্ষণভিত্তিক তথ্য আৰু বন্যপ্ৰাণী সংস্থা তথা বন বিভাগৰ সৈতে সহযোগিতাৰ পৰিকল্পনা কৰিছে। ইয়াৰ ফলত তথ্যসমূহ অধিক নিৰ্ভুল আৰু সমৃদ্ধ হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে।

বিশ্বজুৰি বৰ্তমান প্ৰযুক্তিক প্ৰকৃতি সংৰক্ষণৰ ক্ষেত্ৰত ব্যৱহাৰৰ প্ৰৱণতা বৃদ্ধি পাইছে। কৃত্ৰিম বুদ্ধিমত্তা, তথ্যভঁৰাল আৰু মোবাইল প্ৰযুক্তিৰ সহায়ত বন্যপ্ৰাণী সংৰক্ষণৰ বহু নতুন দিশ উন্মোচিত হৈছে। 'পখী' সেই ধাৰাৰেই অসমৰ এক উল্লেখযোগ্য সংযোজন।

জৈৱ-বৈচিত্ৰ্য সংৰক্ষণ কেৱল চৰকাৰ বা গৱেষকৰ দায়িত্ব নহয়; ই প্ৰতিজন সচেতন নাগৰিকৰো কৰ্তব্য। 'পখী'ৰ দৰে উদ্যোগে সেই দায়িত্ব পালনত সমাজক উদ্বুদ্ধ কৰিব পাৰে। অসমৰ প্ৰাকৃতিক ঐতিহ্য, লোকসংস্কৃতি আৰু পৰিৱেশ সুৰক্ষাৰ ক্ষেত্ৰত এই ডিজিটেল ভঁৰাল ভৱিষ্যতে এক গুৰুত্বপূৰ্ণ মাইলৰ খুঁটি হিচাপে পৰিগণিত হ'ব বুলি আশা কৰা হৈছে।

'পখী'ৰ দৰে উদ্ভাৱনী পদক্ষেপে দেখুৱাইছে যে প্ৰযুক্তি কেৱল উন্নয়নৰ মাধ্যমেই নহয়, প্ৰকৃতি সংৰক্ষণৰো এক শক্তিশালী হাতিয়াৰ। অসমৰ আকাশত উৰি ফুৰা পক্ষীসমূহৰ কাকলি যাতে ভৱিষ্যৎ প্ৰজন্মৰো শুনিব পাৰে, তাৰ বাবে এনে উদ্যোগক সমাজৰ সকলো স্তৰৰ সমৰ্থন আৰু সহযোগিতা সময়ৰ দাবী।

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

(০৩-০৭-২০২৬ৰ পৰা ০৯-০৭-২০২৬লৈ)

- মেঘ :** মানসিক অস্থিৰতা থাকিব পাৰে। কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ কৰিব। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবে সপ্তাহটো শুভ।
- বৃষ :** ভাগ্যৰ সহায় লাভ কৰিব। মানসিক অস্থিৰতা অনুভৱ হ'ব পাৰে। মাতৃৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি বিশেষ যত্ন লওক।
- মিথুন :** আকস্মিক ব্যয় বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। কৰ্মক্ষেত্ৰত ব্যস্ততা বৃদ্ধি পাব পাৰে। প্ৰেমৰ ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ কৰিব।
- কৰ্কট :** স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতন হওক। মানসিক অস্থিৰতা থাকিব পাৰে। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবে সপ্তাহটো শুভ।
- সিংহ :** অদৰকাৰী বাদ-বিবাদৰ পৰা বিৰত থাকক। আকস্মিক ব্যয় বৃদ্ধি হ'ব পাৰে। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবে শুভ সময়।
- কন্যা :** প্ৰতিযোগিতামূলক ক্ষেত্ৰত সফলতা লাভ কৰিব। ব্যৱসায়-বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ কৰিব। প্ৰেমৰ ক্ষেত্ৰতো শুভ।
- তুলা :** মানসিক অস্থিৰতা থাকিব পাৰে। কৰ্মক্ষেত্ৰত সফলতা অৰ্জন কৰিব। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবে সপ্তাহটো শুভ।
- বৃশ্চিক :** মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি পাব পাৰে। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবে শুভ সময়। সন্তানৰ উন্নতি আৰু সাফল্যৰ সম্ভাৱনা আছে।
- ধনু :** কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ কৰিব। অদৰকাৰী কামত সময় নষ্ট কৰাৰ পৰা বিৰত থাকক। মাতৃৰ স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি যত্ন লওক।
- মকৰ :** ব্যৱসায়-বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ কৰিব। অদৰকাৰী বাদ-বিবাদৰ পৰা বিৰত থাকক। মানসিক সুখ-শান্তি বৃদ্ধি পাব।
- কুম্ভ :** স্বাস্থ্যৰ প্ৰতি সচেতন হওক। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ কৰিব। সন্তানৰ সুনাম বৃদ্ধি পাব।
- মীন :** ব্যয় বৃদ্ধি হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে। স্বাস্থ্যৰ ক্ষেত্ৰত শুভ ফল লাভ কৰিব। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবে সপ্তাহটো শুভ।

- হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী

অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা

যোগাযোগ : ৯৮৫৪০ ২৬৭৭৯

৫ বছৰেও সম্পূৰ্ণ নহ'ল নঙলামৰা ঘাটৰ দিচাং দলং

জন জন বিচাৰ

...শ্রী নাজিৰা

শাসকীয় পক্ষই উন্নয়ন আৰু আন্তঃগাঁথনিৰ ক্ষেত্ৰত একাধিক সাফল্যৰ দাবী কৰি অহাৰ মাজতে শিৱসাগৰ জিলাৰ নঙলামৰা ঘাটৰ দিচাং নদীৰ ওপৰত নিৰ্মীয়মাণ দলংখনৰ শ্লথ গতি এতিয়া চৰকাৰৰ উন্নয়নমূলক প্ৰতিশ্ৰুতিৰ ওপৰত নতুনকৈ প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে। প্ৰায় পাঁচ বছৰ অতিক্ৰম কৰাৰ পিছতো দলংখন সম্পূৰ্ণ নোহোৱাত প্ৰতিদিনে হাজাৰ হাজাৰ পথচাৰীয়ে জীৱনক মুঠিত লৈ বিপদসংকুলভাৱে যাতায়াত কৰিবলৈ বাধ্য হৈছে।

চেপন-চুনপোৰা পথত অৱস্থিত এই দিচাং দলংখন ১৯৭২-৭৫ চনৰ ভিতৰত তদানীন্তন মাহমৰা সমষ্টিৰ বিধায়ক প্ৰয়াত দুৰ্গেশ্বৰ শইকীয়াৰ সময়ত নিৰ্মাণ কৰা হৈছিল। দীৰ্ঘদিন ধৰি ব্যৱহাৰৰ ফলত জৰাজীৰ্ণ হৈ পৰা দলংখনৰ উত্তৰ অংশ ২০২২ চনৰ ১৬ জানুৱাৰীত খহি পৰাৰ পিছত অঞ্চলজুৰি সংকটৰ সৃষ্টি হয়।

পৰৱৰ্তী সময়ত তদানীন্তন কেবিনেট মন্ত্ৰী যোগেন মহনৰ উদ্যোগত এনজিচিৰ সহযোগত



চেপন-চুনপোৰা পথত
চৰকাৰৰ উন্নয়নৰ দাবীক
লৈ প্ৰশ্নচিহ্ন, জীৱনৰ
আশংকাৰে যাতায়াত
ৰাইজৰ

এটা বেইলি দলং স্থাপন কৰি সাময়িকভাৱে যাতায়াতৰ ব্যৱস্থা কৰা হৈছিল। যদিও এই বেইলি দলংখনৰ বহনক্ষমতা মাত্ৰ ২০ টন, তথাপিও ইয়াৰ ওপৰেদি নিয়মীয়াকৈ ৫০ৰ পৰা ৮০ টনৰ অধিক ওজনৰ গধুৰ বাহন চলাচল কৰি থকাত স্থানীয় লোকসকলৰ মাজত তীব্ৰ উদ্বেগৰ সৃষ্টি হৈছে।

ইয়াৰ মাজতে চৰকাৰে প্ৰায় ৩০ কোটি টকাৰ ব্যয়ে নতুন দলং নিৰ্মাণৰ ঘোষণা কৰিছিল। কিন্তু

কাম আৰম্ভ হোৱাৰ কেইবাবছৰ পাৰ হৈ গল যদিও আজিও দলংখন সম্পূৰ্ণ নহ'ল। নিৰ্মাণ কাৰ্য চলি থকাৰ সময়তেই পুৰণি দলংখনৰ আনটো মূৰৰ গাৰ্ডৰেল খহি পৰাত পৰিস্থিতি আৰু অধিক জটিল হৈ পৰে।

বৰ্তমান দলংখনৰ দুয়োটা মূৰত গধুৰ যান-বাহনৰ প্ৰৱেশ নিষিদ্ধ কৰা হৈছে। কেৱল সৰু আৰু যাত্ৰীবাহী বাহন একমুখীভাৱে অতি সাৱধানতাৰে পাৰাপাৰ কৰাৰ

অনুমতি আছে। ফলত দুয়োফালৰ বাহনসমূহে ঘণ্টাৰ পিছত ঘণ্টা অপেক্ষা কৰিবলগীয়া হয়। এই পথেৰে নাগালেণ্ড আৰু উজনি অসমৰ বহু লোক ডিব্ৰুগড় অসম চিকিৎসা মহাবিদ্যালয়লৈ যাতায়াত কৰে। ৰোগী কঢ়িয়াই নিয়া বাহনেও এই সমস্যাৰ বাবে অসুবিধাৰ সন্মুখীন হ'ব লগা হৈছে।

লোকনিৰ্মাণ বিভাগে দলংখনৰ কাষত 'সাৱধান, দুৰ্বল দলং' বুলি জাননী ফলক স্থাপন কৰি গধুৰ

বাহনৰ চলাচল নিষিদ্ধ কৰিছে যদিও স্থানীয় লোকৰ অভিযোগ, কেৱল জাননী টাঙি দায়িত্ব সামৰি ৰখাই যথেষ্ট নহয়। সময়মতে নিৰ্মাণ সম্পূৰ্ণ নকৰাৰ ফল ভুগিবলগীয়া হৈছে সাধাৰণ ৰাইজে।

নঙলামৰা ঘাটৰ এই দিচাং দলং শিৱসাগৰ, নাজিৰা আৰু ডিমৌ-এই তিনিওটা বিধানসভা সমষ্টিৰ লগতে নাজিৰা আৰু ডিমৌ ৰাজহ চক্ৰৰ মাজৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ সংযোগসূত্ৰ। সেয়ে দলংখনৰ কাম শীঘ্ৰে সম্পূৰ্ণ কৰাৰ দাবী এতিয়া স্থানীয় ৰাইজৰ লগতে বিভিন্ন সামাজিক সংগঠনে জোৰদাৰভাৱে উত্থাপন কৰিছে।

উন্নয়নৰ বহু প্ৰতিশ্ৰুতি আৰু ঘোষণাৰ মাজত নঙলামৰা ঘাটৰ দিচাং দলং আজিও অসম্পূৰ্ণ। সেয়েহে প্ৰশ্ন উত্থাপিত হৈছে- জনগণে আৰু কিমান দিন এনে বিপদসংকুল দলঙৰ ওপৰেদি জীৱনৰ ঝুঁকি লৈ যাতায়াত কৰিব লাগিব? চৰকাৰ আৰু বিভাগীয় কৰ্তৃপক্ষই এই গুৰুত্বপূৰ্ণ আন্তঃগাঁথনি শীঘ্ৰে সম্পূৰ্ণ কৰাৰ বাবে কেতিয়া ফলপ্ৰসূ পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰে, সেয়াই এতিয়া সমগ্ৰ অঞ্চলবাসীৰ অপেক্ষাৰ বিষয়।

নাজিৰাৰ নামত ভূৱা অনলাইন লটাৰীৰে প্ৰৱঞ্চনা

জন জন বিচাৰ

...শ্রী নাজিৰা

শ্ৰী শ্ৰী শিৱ মন্দিৰ উন্নয়নৰ নামত নাজিৰাৰ খেলৰ স্থান হিচাপে উল্লেখ কৰি এক প্ৰৱঞ্চক চক্ৰই ভূৱা অনলাইন লটাৰী চলাই অসমৰ বিভিন্ন প্ৰান্তৰ লোকৰ পৰা লাখ লাখ টকা সংগ্ৰহ কৰাৰ অভিযোগ উত্থাপিত হৈছে। ঘটনাটোক কেন্দ্ৰ কৰি নাজিৰাসহ ৰাজ্যজুৰি তীব্ৰ প্ৰতিক্ৰিয়াৰ সৃষ্টি হৈছে।

অভিযোগ অনুসৰি, সামাজিক মাধ্যমত ব্যাপক প্ৰচাৰৰ জৰিয়তে লটাৰীৰ টিকট বিক্ৰীৰ পিছত প্ৰৱঞ্চক চক্ৰটোৱে ভূৱা ফলাফল প্ৰকাশ কৰি পুৰস্কাৰ লাভ কৰাৰ প্ৰলোভন দেখুৱাই বিভিন্ন ব্যক্তিক ফোনযোগে যোগাযোগ কৰে। চাৰিচকীয়া বাহন লাভ কৰা বুলি জনাই 'প্ৰচেছিং', 'বীমা' আদি বিভিন্ন শিতানত ৮,৭০০ টকাৰ পৰা ১২,৩৫০ টকালৈকে আগতীয়াকৈ অনলাইনযোগে জমা দিবলৈ দাবী কৰা হয়।

নগাঁওৰ ৰহা আৰু হোজাইৰ ডবকা অঞ্চলৰ একাধিক ব্যক্তিয়ে জনোৱা মতে, তেওঁলোকলৈ ফোন কৰি ২৯ জুনত নাজিৰাৰ এখন শিৱ মন্দিৰত পুৰস্কাৰ বিতৰণ কৰা হ'ব

বুলি কোৱা হৈছিল। ধন আদায়ৰ বাবে বিভিন্ন ইউপিআই একাউণ্টো প্ৰেৰণ কৰা হৈছিল।

ঘটনাৰ খবৰ লাভ কৰাৰ পিছতে নাজিৰা আদৰ্শ আৰক্ষী থানাই তদন্ত আৰম্ভ কৰিছে। আৰক্ষীয়ে ৰাইজক এনেধৰণৰ ভূৱা লটাৰী বা অনলাইন প্ৰলোভনত ভোল নাযাবলৈ আহ্বান জনোৱাৰ লগতে সন্দেহজনক ফোনকল বা ধন দাবীৰ ঘটনা তৎক্ষণাত আৰক্ষীক অৱগত কৰিবলৈ অনুৰোধ জনাইছে।

বিশিষ্ট কবি-লেখক
মাখন চন্দ্ৰ দত্তৰ
দেহাৱসান



নাজিৰাৰ ন-মাটি নাওশলীয়া গাঁৱৰ নিবাসী বিশিষ্ট কবি, লেখক, শিক্ষাবিদ তথা ধৰ্মপ্ৰাণ ব্যক্তি মাখন

চন্দ্ৰ দত্তৰ বৃহস্পতিবাৰে পুৱা ৯.০৭ বজাত ডিব্ৰুগড় চিকিৎসা মহাবিদ্যালয় চিকিৎসালয়ত হৃদৰোগত আক্ৰান্ত হৈ ৮৫ বছৰ বয়সত দেহাৱসান ঘটে।

বিজ্ঞান শাখাত স্নাতক ডিগ্ৰী লাভ কৰা দত্তই প্ৰথমে নাজিৰা উচ্চতৰ মাধ্যমিক বিদ্যালয়ত শিক্ষকতা কৰি পিছলৈ নামৰূপ সাৰ কাৰখানাৰ (BVFCL) ৰাসায়নিক পৰীক্ষাগাৰ বিভাগৰ জ্যেষ্ঠ বিষয়া হিচাপে কৰ্মৰত আছিল। সাহিত্য, সমাজসেৱা আৰু ধৰ্মীয় ক্ষেত্ৰত তেওঁ সক্ৰিয় ভূমিকা পালন কৰিছিল। নামৰূপ সাহিত্য সভাৰ সম্পাদক আৰু সভাপতি হিচাপে দায়িত্ব পালন কৰাৰ লগতে সমলয় কবি চক্ৰ আৰু শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱ সংঘৰ বিভিন্ন সাংগঠনিক কাৰ্যসূচীৰ সৈতে ওতঃপ্ৰোতভাৱে জড়িত আছিল। অসম সাহিত্য সভাৰ আজীৱন সদস্য হিচাপেও তেওঁ উল্লেখযোগ্য অৱদান আগবঢ়াইছিল।

তেওঁৰ মৃত্যুত নামৰূপ সাহিত্য সভা, শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱ সংঘ, শিৱসাগৰ জিলা সাহিত্য সভাকে ধৰি বিভিন্ন সামাজিক-সাংস্কৃতিক সংগঠনে গভীৰ শোক প্ৰকাশ কৰি বিদেহ আত্মাৰ চিৰশান্তি কামনা কৰাৰ লগতে শোকসন্তপ্ত পৰিয়ালবৰ্গলৈ সমবেদনা জ্ঞাপন কৰিছে।

জুবিন গাৰ্গৰ সম্পত্তিৰ বৈধ উত্তৰাধিকাৰী গৰিমা শইকীয়া



জন জন বিচাৰ

...শ্রী গুৱাহাটী

অসমৰ প্ৰখ্যাত সংগীতশিল্পী প্ৰয়াত জুবিন গাৰ্গৰ পত্নী গৰিমা শইকীয়া গাৰ্গক আদালতে তেওঁৰ সম্পত্তিৰ বৈধ উত্তৰাধিকাৰী হিচাপে স্বীকৃতি দি উত্তৰাধিকাৰ প্ৰমাণপত্ৰ আনুষ্ঠানিকভাৱে প্ৰদান কৰিছে। জিলা আৰু সত্ৰ ন্যায়াধীশে ১৮ জুনত এই মৰ্মে আদেশ জাৰি কৰিছিল আৰু ২২ জুনত প্ৰক্ৰিয়া সম্পূৰ্ণ হৈছিল যদিও সেইদিনা গৰিমা উপস্থিত নথকাৰ বাবে বুধবাৰে তেওঁক প্ৰমাণপত্ৰ হস্তান্তৰ কৰা হয়।

প্ৰমাণপত্ৰ লাভ কৰাৰ পিছত গৰিমা শইকীয়া গাৰ্গে কয় যে, জুবিন গাৰ্গে সদায় মানুহৰ বাবে

কাম কৰাৰ সপোন দেখিছিল আৰু তেওঁৰ সেই আদৰ্শ আগবঢ়াই নিয়াটো এতিয়া নিজৰ দায়িত্ব বুলি তেওঁ অনুভৱ কৰে। তেওঁ আৱেগিক কণ্ঠেৰে কয়, জুবিনে কেতিয়াও ধন-সম্পত্তি সঞ্চয়ক জীৱনৰ লক্ষ্য হিচাপে লোৱা নাছিল।

আদালতত দাখিল কৰা নথি অনুসৰি, জুবিন গাৰ্গে এৰি যোৱা মুঠ আৰ্থিক সম্পত্তিৰ পৰিমাণ প্ৰায় ৯.৬৩ লাখ টকা। ইয়াৰ ভিতৰত বিভিন্ন বেংক হিচাপ আৰু মিউচুৱেল ফাণ্ডত জমা থকা ধন অন্তৰ্ভুক্ত। প্ৰায় তিনিটা দশকজুৰি সংগীত জগতত অসামান্য অৱদান আগবঢ়োৱা শিল্পীগৰাকীৰ সামান্য আৰ্থিক সম্পত্তিৰ তথ্যই বহু অনুৰাগীক আৱেগিক কৰি তুলিছে।

সম্পাদকীয়

ছেচেলছৰ সৈতে ভাৰতৰ
কৌশলগত সম্পৰ্ক

হিন্দ মহাসাগৰ কেৱল এখন সামুদ্রিক অঞ্চল নহয়, ই আজিৰ বিশ্বৰ অর্থনীতি, বাণিজ্য, শক্তি সুৰক্ষা আৰু ভূ-ৰাজনীতিৰ অন্যতম কেন্দ্ৰবিন্দু। বিশ্ব বাণিজ্যৰ এক বৃহৎ অংশ এই জলপথৰ মাজেৰে পৰিবহণ হয়। সেয়েহে এই অঞ্চলত প্ৰভাৱ বিস্তাৰক লৈ বিশ্বৰ বৃহৎ শক্তিসমূহৰ মাজত প্ৰতিযোগিতা অব্যাহত আছে। এনে পৰিস্থিতিত ভাৰত আৰু ছেচেলছৰ মাজত সুদৃঢ় হৈ অহা সম্পৰ্ক কেৱল দ্বিপাক্ষিক সহযোগিতাৰ পৰিসৰ বৃদ্ধি কৰা নাই, বৰং ভাৰতৰ আঞ্চলিক আৰু বৈশ্বিক কূটনৈতিক ভূমিকা অধিক শক্তিশালী কৰিছে।

প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোদীৰ শেহতীয়া ছেচেলছ

ভ্ৰমণে সামুদ্রিক সুৰক্ষা, উপকূলীয় নজৰদাৰী, নীলা অর্থনীতি, ডিজিটেল প্ৰযুক্তি, জলবায়ু পৰিৱৰ্তন, দুৰ্যোগ ব্যৱস্থাপনা আৰু উন্নয়নমূলক সহযোগিতাৰ ক্ষেত্ৰত নতুন দিগন্ত উন্মোচন কৰিছে। ভাৰতৰ SAGAR (Security and Growth for All in the Region) নীতিৰ মূল উদ্দেশ্য হৈছে সমগ্ৰ হিন্দ মহাসাগৰীয় অঞ্চলত সকলো দেশৰ বাবে সুৰক্ষা, স্থিতিশীলতা আৰু সমৃদ্ধি নিশ্চিত কৰা। ছেচেলছৰ সৈতে অংশীদাৰিত্বে এই নীতিক অধিক বাস্তৱমুখী কৰি তুলিছে।

একেদৰে, চীনৰ ক্ৰমবৰ্ধমান সামুদ্রিক আৰু অর্থনৈতিক উপস্থিতিৰ মাজত ভাৰতৰ বাবে আস্থাভাজন সহযোগী ৰাষ্ট্ৰৰ সংখ্যা বৃদ্ধি কৰাটো এক কৌশলগত প্ৰয়োজন। অৱশ্যে এই প্ৰতিযোগিতা সংঘাতৰ নহয়; ই উন্নয়ন, সহযোগিতা আৰু নিয়মভিত্তিক আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় ব্যৱস্থাৰ প্ৰতিযোগিতা হ'ব

লাগিব। ক্ষুদ্ৰ দ্বীপ ৰাষ্ট্ৰসমূহৰ উন্নয়ন, জলবায়ু পৰিৱৰ্তনৰ সৈতে মোকাবিলা আৰু সামুদ্রিক সম্পদৰ বহনক্ষম ব্যৱহাৰত ভাৰতৰ সহযোগিতাই বিশ্ব দক্ষিণৰ দায়িত্বশীল অংশীদাৰ হিচাপে দেশখনৰ ভাবমূৰ্তি অধিক উজ্জ্বল কৰিছে।

আজিৰ বিশ্বত কূটনীতিৰ সফলতা কেৱল সামৰিক শক্তিয়ে জুখা নহয়; ই আস্থা, সময়োপযোগী সহযোগিতা, উন্নয়নমূলক অংশীদাৰিত্ব আৰু দীৰ্ঘম্যাদী বিশ্বাসৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীল। ছেচেলছৰ সৈতে ভাৰতৰ সম্পৰ্ক সেই নতুন কূটনৈতিক দৰ্শনৰেই প্ৰতিফলন। এই সম্পৰ্ক অধিক শক্তিশালী হ'লে হিন্দ মহাসাগৰত শান্তি, মুক্ত নৌ-চলাচল, আঞ্চলিক স্থিতিশীলতা আৰু ভাৰতৰ বৈশ্বিক কৌশলগত প্ৰভাৱ অধিক সুদৃঢ় হ'ব। ভৱিষ্যতৰ বিশ্ব ব্যৱস্থাত ভাৰতৰ নেতৃত্বৰ পথ সুগম কৰাত এনে অংশীদাৰিত্বই নিঃসন্দেহে গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰিব।

বাংলাদেশত চীনৰ ক্ৰমবৰ্ধমান উপস্থিতি

জন জন বিচার

...অভিনয় আকাশ

দক্ষিণ এছিয়াৰ ভূ-ৰাজনীতি দ্ৰুতগতিত সলনি হৈ আছে। ভাৰতৰ চাৰিওফালে চীনৰ ক্ৰমবৰ্ধমান অর্থনৈতিক, কূটনৈতিক আৰু কৌশলগত উপস্থিতিয়ে নতুন উদ্বেগৰ সৃষ্টি কৰিছে। শেহতীয়াকৈ বাংলাদেশৰ মোংলা বন্দৰ, তীস্তা প্ৰকল্প আৰু চীনৰ বিনিয়োগক কেন্দ্ৰ কৰি আৰম্ভ হোৱা নতুন সমীকৰণে ভাৰতৰ কৌশলগত মহলত গুৰুত্বপূৰ্ণ আলোচনা আৰম্ভ কৰিছে। প্ৰশ্ন উঠিছে-ভাৰতে কেৱল বন্ধুত্ব আৰু সহযোগিতাৰ নীতিৰে আগবাঢ়িব নে নিজৰ সুৰক্ষাৰ স্বার্থত অধিক স্পষ্ট আঞ্চলিক কৌশল গ্ৰহণ কৰিব?

মোংলা বন্দৰ ভাৰতৰ উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ বাবে এক গুৰুত্বপূৰ্ণ প্ৰৱেশদ্বাৰ। স্থলবেষ্টিত এই অঞ্চললৈ সাগৰীয় পথেদি সামগ্ৰী পৰিবহণ সহজ কৰাৰ ক্ষেত্ৰত এই বন্দৰৰ ভূমিকা অত্যন্ত তাৎপৰ্যপূৰ্ণ। ২০১৫ চনত ভাৰত আৰু বাংলাদেশৰ মাজত হোৱা এক বুজাবুজি চুক্তিৰ অধীনত ভাৰতক মোংলা আৰু চট্টগ্ৰাম বন্দৰ ব্যৱহাৰৰ সুবিধা প্ৰদান কৰা হৈছিল। মোংলা বন্দৰৰ কাষত প্ৰায় ১১০ একৰ ভূমিও বিশেষ অর্থনৈতিক অঞ্চল স্থাপনৰ বাবে ভাৰতক আবণ্টন দিয়া হৈছিল। লক্ষ্য আছিল-উদ্যোগ, গুদাম আৰু বাণিজ্যিক পৰিকাঠামো গঢ়ি তুলি দুয়োখন দেশৰ অর্থনীতি অধিক সংযুক্ত কৰা।

কিন্তু এই পৰিকল্পনা বহু বছৰ ধৰি কাগজতে সীমাবদ্ধ হৈ থাকিল। প্ৰকল্পৰ কাম সময়মতে আৰম্ভ নহ'ল। এই বিলম্বৰ মাজতেই বাংলাদেশৰ ৰাজনৈতিক পৰিস্থিতিত আমূল পৰিৱৰ্তন আহিল। ২০২৪ চনৰ গণআন্দোলনৰ ফলত দীৰ্ঘদিনীয়া প্ৰধানমন্ত্ৰী শ্বেখ হাছিনাৰ চৰকাৰৰ পতন ঘটে আৰু অন্তৰ্জাতীকালীন চৰকাৰ ক্ষমতালৈ আহে। এই নতুন ৰাজনৈতিক পৰিৱেশত ঢাকাৰ বৈদেশিক নীতি অধিক বহুমুখী হ'বলৈ আৰম্ভ কৰে।

এই সুযোগতে চীনে বাংলাদেশত নিজৰ অর্থনৈতিক উপস্থিতি অধিক শক্তিশালী কৰাৰ পদক্ষেপ লয়। মোংলা বন্দৰ উন্নয়নৰ বাবে বৃহৎ বিনিয়োগৰ আগ্ৰহ, নতুন উদ্যোগিক অঞ্চল স্থাপনৰ প্ৰস্তাৱ আৰু সামুদ্রিক

ভাৰতে নিজৰ 'লক্ষ্যমণ ৰেখা' নিৰ্ধাৰণ
কৰাৰ সময় আহি গ'ল নেকি?

সহযোগিতা বৃদ্ধি-এই সকলো পদক্ষেপে দক্ষিণ এছিয়াত চীনৰ কৌশলগত লক্ষ্যক অধিক স্পষ্ট কৰি তুলিছে।

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, চীনৰ মূল লক্ষ্য কেৱল বাণিজ্য বৃদ্ধি নহয়; বৰং আঞ্চলিক সংযোগ, সামুদ্রিক পথ আৰু কৌশলগত প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰা। পাকিস্তানৰ গোৱাদৰ, শ্ৰীলংকাৰ হান্সানটোটাৰ পিছত বাংলাদেশৰ বন্দৰসমূহতো চীনৰ উপস্থিতি বৃদ্ধি পালে ভাৰতৰ সাগৰীয় সুৰক্ষা আৰু পূৰ্বাঞ্চলীয় কৌশলৰ ওপৰত প্ৰভাৱ পৰিব পাৰে। এই প্ৰেক্ষাপটত বহু বিশ্লেষকে "String of Pearls" বা ভাৰত মহাসাগৰত চীনৰ কৌশলগত বিন্দুসমূহ সংযোগ কৰাৰ নীতিৰ কথা পুনৰ উত্থাপন কৰিছে।

অৱশ্যে এই বিষয়ত সৱধানতা অবলম্বন কৰাটোও সমানেই প্ৰয়োজন। বাংলাদেশ এখন স্বাধীন আৰু সাৰ্বভৌম ৰাষ্ট্ৰ। নিজ স্বার্থ অনুসৰি কোন দেশৰ সৈতে বিনিয়োগ বা উন্নয়নমূলক অংশীদাৰিত্ব কৰিব, সেয়া সিদ্ধান্ত লোৱাৰ পূৰ্ণ

অধিকাৰ বাংলাদেশৰ আছে। চীনৰ বিনিয়োগ মানেই সামৰিক ঘাটি বা ভাৰতবিৰোধী কাৰ্যকলাপ-এনে সিদ্ধান্তত উপনীত হোৱাটোও যুক্তিসংগত নহয়। বৰ্তমানলৈকে মোংলা বন্দৰক চীনৰ সামৰিক ঘাটি হিচাপে ব্যৱহাৰ কৰাৰ কোনো আনুষ্ঠানিক বা প্ৰমাণিত তথ্য প্ৰকাশ পোৱা নাই।

কিন্তু ভূ-ৰাজনীতিৰ বাস্তৱতা হৈছে-বৃহৎ পৰিকাঠামোগত বিনিয়োগ বহু সময়ত কূটনৈতিক আৰু কৌশলগত প্ৰভাৱ বৃদ্ধিৰ মাধ্যমে হৈ উঠিব পাৰে। সেইবাবেই ভাৰতৰ নীতিনিৰ্ধাৰকসকলে এই ঘটনাবোৰ নিবিড়ভাৱে পৰ্যবেক্ষণ কৰি আছে।

এই পৰিস্থিতিত ভাৰতৰ বাবে মুখ্য প্ৰশ্ন হৈছে-আগলৈ কিদৰে আগবাঢ়িব?

প্ৰথমতে, ভাৰতে নিজৰ প্ৰতিশ্ৰুতি উন্নয়নমূলক প্ৰকল্পসমূহ সময়মতে সম্পূৰ্ণ কৰাৰ সক্ষমতা বৃদ্ধি কৰিব লাগিব। কেৱল চুক্তি স্বাক্ষৰ কৰিলেই নহ'ব; বাস্তৱায়নো সমানেই জৰুৰী।

দ্বিতীয়তে, বাংলাদেশ, নেপাল, ভূটান, শ্ৰীলংকা আৰু মালদ্বীপৰ সৈতে পাৰস্পৰিক লাভজনক অর্থনৈতিক সম্পৰ্ক অধিক শক্তিশালী কৰিব লাগিব। উন্নয়ন, বাণিজ্য, শক্তি, সংযোগ আৰু শিক্ষা ক্ষেত্ৰত সহযোগিতা বৃদ্ধি কৰাটোৱেই স্থায়ী আস্থা গঢ়াৰ মূল উপায়।

তৃতীয়তে, ভাৰতৰ উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ পৰিকাঠামো, বন্দৰ সংযোগ, ৰেল আৰু পথ ব্যৱস্থা অধিক উন্নত কৰি অঞ্চলটোক দেশৰ মূল অর্থনৈতিক ধাৰাৰ সৈতে অধিক সংযুক্ত কৰিব লাগিব।

আনহাতে, সামৰিক আৰু কৌশলগত ক্ষেত্ৰতো ভাৰতক নিজৰ সামুদ্রিক সক্ষমতা আৰু সীমান্ত সুৰক্ষা অধিক শক্তিশালী কৰি যাব লাগিব। কিন্তু এই পদক্ষেপ কূটনৈতিক সম্পৰ্ক ক্ষতিগ্ৰস্ত নকৰাকৈ সুসমন্বিতভাৱে গ্ৰহণ কৰাটোৱেই হ'ব বুদ্ধিমত্তাৰ পৰিচায়ক।

কেইবাজন বিশ্লেষকে এই প্ৰেক্ষাপটত মুনৰো ডক্ট্ৰিনৰ দৰে আঞ্চলিক সুৰক্ষা নীতিৰ উল্লেখ কৰিছে। ইতিহাসত ১৮২৩ চনত আমেৰিকাই পশ্চিম গোলাৰ্ধত বাহ্যিক শক্তিৰ হস্তক্ষেপৰ বিৰুদ্ধে এই নীতি ঘোষণা কৰিছিল। কিন্তু একবিংশ শতিকাৰ দক্ষিণ এছিয়াৰ বাস্তৱতা উনবিংশ শতিকাৰ আমেৰিকাৰ সৈতে একে নহয়। বৰ্তমান আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় ব্যৱস্থাত সহযোগিতা, অর্থনৈতিক আন্তঃনিৰ্ভৰশীলতা আৰু বহুপাক্ষিক কূটনীতি অধিক গুৰুত্বপূৰ্ণ। সেয়ে ভাৰতীয় মুনৰো ডক্ট্ৰিন যদি কোনোদিনে গঢ়ি উঠে, তেন্তে সেয়া শক্তি প্ৰদৰ্শনৰ পৰিৱৰ্তে আঞ্চলিক আস্থা, উন্নয়ন আৰু সুৰক্ষাৰ সমন্বিত নীতি হ'ব লাগিব।

বাংলাদেশ আৰু ভাৰত কেৱল দুটা প্ৰতিবেশী দেশ নহয়; ইতিহাস, সংস্কৃতি, ভাষা, বাণিজ্য আৰু মুক্তিযুদ্ধৰ স্মৃতিৰে সংযুক্ত দুটা ঘনিষ্ঠ অংশীদাৰ। এই সম্পৰ্ক অক্ষুণ্ণ ৰাখি একে সময়তে ভাৰতৰ বৈধ কৌশলগত স্বার্থ সুৰক্ষিত কৰাটোৱেই হ'ব নতুন দিল্লীৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ কূটনৈতিক পৰীক্ষা।

দক্ষিণ এছিয়াৰ নতুন শক্তিৰাজনীতিত যি দেশ সময়মতে সিদ্ধান্ত ল'ব, যি দেশ প্ৰতিশ্ৰুতি বাস্তৱায়ন কৰিব আৰু যি দেশ আস্থাৰ ৰাজনীতি গঢ়িব পাৰিব-ভৱিষ্যতৰ নেতৃত্বও সেই দেশেই লাভ কৰিব।

মহাৰাষ্ট্ৰৰ ৰাজনীতিত ‘অপাৰেশ্যন বাঘ’ৰ গৰ্জন

জন জন বিচাৰ

...মুখাই

মহাৰাষ্ট্ৰৰ ৰাজনীতিত মুখ্যমন্ত্ৰী একনাথ শিন্দেৰ নেতৃত্বত চলি থকা ‘অপাৰেশ্যন বাঘ’ পুনৰ এবাৰ চৰ্চাৰ কেন্দ্ৰবিন্দু হৈ পৰিছে। শাসকীয় শিবসেনাৰ শক্তি অধিক সুদৃঢ় কৰাৰ লক্ষ্যৰে চলি থকা ৰাজনৈতিক অভিযানৰ মাজতে স্বতন্ত্ৰ বিধান পৰিষদ সদস্য এমএলচি কিৰণ সৰণাইক আনুষ্ঠানিকভাৱে শিন্দে নেতৃত্বাধীন শিবসেনাত যোগদান কৰিছে।

অমৰাৱতী শিক্ষক সমষ্টিৰ প্ৰতিনিধিত্ব কৰা সৰণাইক দলৰ জ্যেষ্ঠ নেতাসকলৰ উপস্থিতিত শিবসেনাৰ সদস্যপদ গ্ৰহণ কৰে। এই ঘটনাক মহাৰাষ্ট্ৰৰ চলিত ৰাজনৈতিক সমীকৰণত শাসকীয় মহাযুতিৰ বাবে এক গুৰুত্বপূৰ্ণ সফলতা হিচাপে গণ্য কৰা হৈছে।

শিন্দে সৰণাইকক দললৈ

শিন্দে শিবসেনাত যোগ দিলে স্বতন্ত্ৰ এমএলচি কিৰণ সৰণাইক



আদৰ্শ জনাই কয় যে বহু বছৰ ধৰি বিভিন্ন জনস্বার্থমূলক বিষয়ত দুয়ো একেলগে কাম কৰি আহিছে। এতিয়া সৰণাইক আনুষ্ঠানিকভাৱে শিবসেনাৰ সৈতে যুক্ত হোৱাটো দলৰ আদৰ্শ আৰু নেতৃত্বৰ প্ৰতি আস্থাৰ প্ৰতিফলন বুলি তেওঁ মন্তব্য কৰে।

এই ৰাজনৈতিক ঘটনাক্ৰম

সংঘটিত হয় সেই সময়তে, যেতিয়া সচিন আহিৰ মহাৰাষ্ট্ৰ বিধান পৰিষদৰ উপ-সভাপতি হিচাপে নিৰ্বাচনৰ বাবে এক আত্মসমীক্ষণৰ বাবে নিৰ্বাচিত হয়। একেটা দিনতে সংঘটিত এই দুটা ঘটনাই ৰাজ্যৰ ৰাজনৈতিক অংকক নতুন দিশ দিয়া বুলি বিশ্লেষকসকলে মত প্ৰকাশ কৰিছে।

‘অপাৰেশ্যন বাঘ’ৰ লক্ষ্য কি?

শিন্দে শিবসেনাই বিগত কেইমাহ ধৰি বিৰোধী শিবসেনা উদ্ধৰ বালাসাহেব ঠাকৰে নেতা-জনপ্ৰতি নিধিসকলক নিজৰ শিবিলৈ অনাৰ বাবে এক আত্মসমীক্ষণৰ বাবে নিৰ্বাচিত হয়। একেটা দিনতে সংঘটিত এই দুটা ঘটনাই ৰাজ্যৰ ৰাজনৈতিক অংকক নতুন দিশ দিয়া বুলি বিশ্লেষকসকলে মত প্ৰকাশ কৰিছে।

ইয়াৰ পূৰ্বে উদ্ধৰ ঠাকৰে শিবিলৈ হাজিৰ সাংসদে শিন্দে শিবসেনাত যোগদান কৰিছিল। তদুপৰি, নাছিক স্থানীয় স্বশাসিত সংস্থাৰ সমষ্টিত বিজেপিৰ বিৰোধী নেতা গোকুল গীতেয়েও শিন্দে শিবসেনাৰ সহযোগী সদস্য হিচাপে যোগদান কৰে।

ৰাজনৈতিক তাৎপৰ্য

কিৰণ সৰণাইকৰ যোগদানৰ ফলত বিধান পৰিষদত শিন্দে

নেতৃত্বাধীন শিবসেনাৰ উপস্থিতি অধিক শক্তিশালী হোৱাৰ লগতে আগন্তুক নিৰ্বাচনৰ পূৰ্বে শাসকীয় শিবিলৈ সাংগঠনিক ভিত্তিও অধিক মজবুত হব বুলি ধাৰণা কৰা হৈছে। আনহাতে, উদ্ধৰ ঠাকৰে নেতৃত্বাধীন শিবসেনাৰ ওপৰত এই ঘটনাই ৰাজনৈতিক চাপ অধিক বৃদ্ধি কৰিব বুলি বিশেষজ্ঞসকলে মত প্ৰকাশ কৰিছে।

মহাৰাষ্ট্ৰত অব্যাহত থকা দল-বদলৰ ৰাজনীতিয়ে স্পষ্ট কৰি দিছে যে আদৰ্শতকৈ ক্ষমতাৰ সমীকৰণ এতিয়া অধিক প্ৰভাৱশালী হৈ উঠিছে। ‘অপাৰেশ্যন বাঘ’ কেৱল নেতা আকৰ্ষণৰ অভিযান নহয়; ই আগন্তুক নিৰ্বাচনৰ পূৰ্বে মহাৰাষ্ট্ৰৰ ৰাজনৈতিক মানচিত্ৰ পুনৰ গঢ়ি তোলাৰ এক কৌশলগত প্ৰয়াস হিচাপেও চিহ্নিত হৈছে। এই অভিযান কিমান দূৰ সফল হয়, সেয়া আগন্তুক দিনত স্পষ্ট হব।

ডিজিটেল ইণ্ডিয়া: ১১ বছৰত আত্মনিৰ্ভৰ ডিজিটেল ভাৰতৰ ভেটি, ‘বিকশিত ভাৰত’ গঢ়াৰ দিশে এক যুগান্তকাৰী যাত্ৰা

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

২০১৫ চনত আৰম্ভ হোৱা ডিজিটেল ইণ্ডিয়া অভিযান আজি কেৱল চৰকাৰী সেৱাসমূহ অনলাইন কৰাৰ কাৰ্যসূচী নহয়; ই ভাৰতৰ শাসন ব্যৱস্থা, অৰ্থনীতি আৰু নাগৰিক সেৱাৰ এক আমূল ৰূপান্তৰৰ প্ৰতীক। এই উপলক্ষে বিজেপি অসম প্ৰদেশৰ মুখপাত্ৰ ডাঃ জাফৰীন মেহজাবিনে কয় যে, প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোদীৰ দূৰদৰ্শী নেতৃত্বত ডিজিটেল ইণ্ডিয়াই ভাৰতক বিশ্বৰ অগ্ৰণী ডিজিটেল ৰাষ্ট্ৰ হিচাপে গঢ়ি তোলাৰ এক শক্তিশালী আধাৰ সৃষ্টি কৰিছে।

তেওঁ কয়, ২০১৫ চনৰ পূৰ্বে চৰকাৰী সেৱা লাভ কৰাটো জটিল প্ৰশাসনিক প্ৰক্ৰিয়া, কাগজ-পত্ৰৰ ওপৰত অধিক নিৰ্ভৰশীলতা আৰু দীৰ্ঘসূত্ৰিতাবে পৰিপূৰ্ণ আছিল। বিগত ১১ বছৰত তথ্য-প্ৰযুক্তিৰ সুব্যৱহাৰে এই ব্যৱস্থাত আমূল পৰিৱৰ্তন আহিছে। এতিয়া চৰকাৰী সেৱাসমূহ অধিক স্বচ্ছ, দ্ৰুত, জবাবদিহিমূলক আৰু জনমুখী হৈছে। ডিজিটেল ইণ্ডিয়াই প্ৰযুক্তিক কেৱল চহৰ বা বিশেষ শ্ৰেণীৰ মাজতে সীমাবদ্ধ নাৰাখি সমাজৰ প্ৰতিজন নাগৰিকক ক্ষমতায়নৰ এক শক্তিশালী মাধ্যম হিচাপে গঢ়ি তুলিছে।

ডাঃ মেহজাবিনে উল্লেখ কৰে যে জনধন-আধাৰ-মবাইল সংযোগ আজিৰ ভাৰতৰ ডিজিটেল শাসন ব্যৱস্থাৰ মূল আধাৰ। বৰ্তমান দেশত ৫৭.৭৮ কোটিতকৈ অধিক জনধন বেংক হিচাপ, ১৪৪ কোটিতকৈ অধিক আধাৰ নিবন্ধন আৰু ১০৯ কোটিতকৈ অধিক ইণ্টাৰনেট ব্যৱহাৰকাৰী আছে। এই ব্যৱস্থাৰ

ফলত পোনপটীয়া লাভ হস্তান্তৰ ব্যৱস্থা ডিবিটিৰ জৰিয়তে ১৭৬ কোটিতকৈ অধিক লেনদেনৰ মাধ্যমেৰে প্ৰায় ৫১ লাখ কোটি টকা উপভোক্তাৰ বেংক হিচাপত পোনপটীয়াকৈ জমা কৰা হৈছে। ইয়াৰ ফলত মধ্যভোগীৰ ভূমিকা হ্ৰাস পোৱাৰ লগতে ৰাজহ ব্যয়ত অধিক স্বচ্ছতা নিশ্চিত হৈছে।

ডিজিটেল লেনদেনৰ ক্ষেত্ৰতো ভাৰত বিশ্বৰ শীৰ্ষস্থানীয় দেশসমূহৰ অন্যতম। একত্ৰিত পৰিশোধ ব্যৱস্থা ইউপিআই-এ



২০১৬-১৭ বৰ্ষৰ মাত্ৰ ২ কোটি লেনদেনৰ পৰা ২০২৫-২৬ বৰ্ষত ২৪,১৬২ কোটিতকৈ অধিক লেনদেন সম্পন্ন কৰিছে। বৰ্তমান বিশ্বৰ বাস্তৱ-সময়ৰ প্ৰায় আধা ডিজিটেল লেনদেন এই ব্যৱস্থাৰ জৰিয়তেই সম্পন্ন হয়।

ডিজিটেল সংযোগ ব্যৱস্থাৰ বিস্তাৰো এই অভিযানৰ এক উল্লেখযোগ্য সফলতা। ভাৰতনেট আঁচনিৰ অধীনত দেশৰ প্ৰায় ২.১৫ লাখ গাঁও পঞ্চায়ত আলোক-তঁৰৰ জালৰ সৈতে সংযুক্ত কৰা হৈছে। লগতে ৬.৫ লাখতকৈ অধিক জনসেৱা কেন্দ্ৰ আৰু ১.৬ লাখ ডিজিটেল ডাকঘৰৰ জৰিয়তে বেংকিং, স্বাস্থ্য, শিক্ষা, আৰ্থিক সেৱা আৰু চৰকাৰী সুবিধা দুৰ্গম অঞ্চললৈকে সহজে উপলব্ধ

হৈছে।

ইলেক্ট্ৰনিক সামগ্ৰী উৎপাদনৰ ক্ষেত্ৰতো ভাৰতৰ অগ্ৰগতি উল্লেখযোগ্য। ২০১৪-১৫ চনৰ ১.৯ লাখ কোটি টকাৰ উৎপাদন বৃদ্ধি পাই ২০২৬ চনত প্ৰায় ১২ লাখ কোটি টকাত উপনীত হৈছে। মেক ইণ্ডিয়া আৰু উৎপাদন-সংলগ্ন প্ৰেৰণামূলক আঁচনি-ৰ সফল ৰূপায়ণে ভাৰতক বিশ্বৰ দ্বিতীয় বৃহত্তম মবাইল ফোন উৎপাদনকাৰী দেশ হিচাপে প্ৰতিষ্ঠা কৰিছে।

চৰকাৰী সেৱাৰ ডিজিটেল ৰূপান্তৰত ডিজিটেল-এ ৭০.৬৯ কোটিতকৈ অধিক ব্যৱহাৰকাৰীক ৮৫০ কোটিতকৈ অধিক ডিজিটেল নথি সংৰক্ষণৰ সুবিধা প্ৰদান কৰিছে। আনহাতে উমং, পণ্য আৰু সেৱা কৰ নেটৱৰ্ক, ই-আদালত, ই-চিকিৎসালয়, ই-সঞ্জীৱনী, চৰকাৰী ই-বজাৰ, মুকলি ডিজিটেল বাণিজ্য নেটৱৰ্ক আৰু মাইগভ আদি মঞ্চই চৰকাৰী সেৱাক অধিক সহজ, স্বচ্ছ আৰু একত্ৰিত ৰূপ দিছে।

স্বাস্থ্যখণ্ডতো ডিজিটেল ইণ্ডিয়াৰ অৱদান উল্লেখযোগ্য। ই-সঞ্জীৱনীৰ জৰিয়তে ৪৮ কোটিতকৈ অধিক দূৰৱৰ্তী চিকিৎসা পৰামৰ্শ প্ৰদান কৰা হৈছে। কইন মঞ্চই ২২০ কোটিতকৈ অধিক কভিড-১৯ প্ৰতিষেধক প্ৰদান সফলভাৱে পৰিচালনা কৰি জনস্বাস্থ্য ব্যৱস্থাপনাত ভাৰতৰ সক্ষমতাৰ বিশ্বব্যাপী স্বীকৃতি কঢ়িয়াই আনিছে।

যুৱ সমাজক শক্তিশালী কৰাৰ উদ্দেশ্যে গঢ়ি তোলা মাই ভাৰত মঞ্চত ২.২১ কোটিতকৈ অধিক যুৱক-যুৱতীয়ে নামভৰ্তি কৰিছে। স্বেচ্ছাসেৱা, নেতৃত্ব বিকাশ, দক্ষতা বৃদ্ধি আৰু ৰাষ্ট্ৰ গঠনত অংশগ্ৰহণৰ বাবে এই

মঞ্চই এক সজীৱ পৰিৱেশ সৃষ্টি কৰিছে।

কৃষি আৰু শিক্ষাখণ্ডতো ডিজিটেল ইণ্ডিয়াৰ ইতিবাচক প্ৰভাৱ স্পষ্ট। কৃষক পৰিচয় ব্যৱস্থা এগ্ৰিষ্টেক-ৰ অধীনত ৯.২ কোটিতকৈ অধিক কৃষকৰ ডিজিটেল পৰিচয় সৃষ্টি কৰা হৈছে। আনহাতে দীক্ষা, স্বয়ম, পি এম ই-বিদ্যা, আপাৰ, দক্ষ ভাৰত ডিজিটেল মঞ্চ আৰু ইণ্ডিয়া এআই অভিযান-ৰ দৰে পদক্ষেপে নতুন প্ৰজন্মক আধুনিক প্ৰযুক্তিৰ সৈতে সংযুক্ত কৰি তুলিছে।

ডাঃ মেহজাবিনে কয়, বৰ্তমান ভাৰতৰ ডিজিটেল অৰ্থনীতিয়ে দেশৰ মুঠ গৰুৱা উৎপাদনৰ প্ৰায় ১২.১ পৰা ১৪ শতাংশলৈ অৱদান আগবঢ়াইছে। অহা দশকত এই অংশ ২০ শতাংশলৈ বৃদ্ধি পোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে। তথ্য-প্ৰযুক্তি আৰু তথ্য-প্ৰযুক্তিভিত্তিক সেৱা উদ্যোগে ২০২৪-২৫ বৰ্ষত ২৮৩ বিলিয়ন মাৰ্কিন ডলাৰৰ ব্যৱসায় সম্পন্ন কৰিছে।

অসমৰ প্ৰসংগত তেওঁ কয়, মুখ্যমন্ত্ৰী হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাৰ নেতৃত্বত ৰাজ্যত ডিজিটেল শাসন ব্যৱস্থাই নতুন গতি লাভ কৰিছে। অৰুণোদয়, প্ৰধানমন্ত্ৰী কৃষক সন্মান নিধি আৰু মুখ্যমন্ত্ৰী মহিলা উদ্যোগিতা অভিযান-ৰ দৰে আঁচনিসমূহ ডিজিটেল ব্যৱস্থাৰ জৰিয়তে অধিক স্বচ্ছ, দ্ৰুত আৰু জনমুখীভাৱে ৰূপায়ণ কৰা হৈছে। ইয়াৰ ফলত লাখ লাখ পৰিয়াল, কৃষক আৰু মহিলাই প্ৰত্যক্ষভাৱে উপকৃত হৈছে।

তেওঁ শেষত কয়, ডিজিটেল ইণ্ডিয়া আৰু অসম চৰকাৰৰ উন্নয়নমূলক পদক্ষেপৰ সমন্বয়ে ৰাজ্যখনক জ্ঞানভিত্তিক, উদ্বাৰনমুখী আৰু বিনিয়োগ-অনুকূল অৰ্থনীতি হিচাপে গঢ়ি তুলিব। এই যাত্ৰাই ২০৪৭ চনৰ ‘বিকশিত ভাৰত’ গঢ়াৰ সপোন বাস্তৱায়নত অসমকো এক শক্তিশালী অংশীদাৰ হিচাপে প্ৰতিষ্ঠা কৰিব।

XYZ : নিৰ্বাচনী ৰাজনীতিৰ ব্যংগাত্মক আয়না

জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

অসমীয়া চলচ্চিত্ৰ জগতত সামাজিক বিষয়বস্তু আৰু ব্যংগাত্মক উপস্থাপনৰ ধাৰা ক্ৰমাৎ শক্তিশালী হৈ উঠিছে। সেই ধাৰাক নতুন মাত্ৰা দিবলৈ অহা ২৪ জুলাইত মুক্তি পাব পৰিচালক হিমাংশু প্ৰসাদ দাসৰ নতুন অসমীয়া ছবি 'XYZ'। ৰাজনীতি, নিৰ্বাচন আৰু সাধাৰণ মানুহৰ জীৱনক কেন্দ্ৰ কৰি নিৰ্মিত এই ছবিখনে হাস্যৰস, নাটকীয়তা আৰু সামাজিক ব্যংগৰ সমন্বয়ে দৰ্শকৰ সন্মুখত এক ভিন্ন অভিজ্ঞতা দাঙি ধৰাৰ প্ৰতিশ্ৰুতি দিছে।

'XYZ'-এটা নাম, বহু অৰ্থ ছবিখনৰ শিৰোনাম 'XYZ' কোনো নিৰ্দিষ্ট ব্যক্তিৰ নাম নহয়। পৰিচালকৰ ভাষা অনুসৰি, 'XYZ' হৈছে সেই অসংখ্য নামহীন মানুহৰ প্ৰতীক, যিসকলে নিৰ্বাচন আৰু গণতান্ত্ৰিক ব্যৱস্থাৰ মূল চালিকাশক্তি হোৱাৰ পিছতো অধিকাংশ সময়তেই আলোচনাৰ বাহিৰত বৈ যায়। ৰাজনীতিবিদসকল সদায় চৰ্চাৰ কেন্দ্ৰবিন্দুত থাকে, কিন্তু ভোটদান কৰা নাগৰিক, তৃণমূলৰ কৰ্মী আৰু নীৰৱভাৱে গণতন্ত্ৰক আগবঢ়াই নিয়া সাধাৰণ মানুহৰ কাহিনী সচৰাচৰ কোনোবাই নকয়। সেই নীৰৱ মানুহৰ জীৱনকেই ছবিখনৰ মূল বিষয়বস্তু।

ব্যংগৰ মাজেৰে ৰাজনীতিৰ
বাস্তৱ ছবি

'XYZ' এখন ৰাজনৈতিক ব্যংগধৰ্মী কমেডি। ছবিখনত কাল্পনিক ৰাজনৈতিক দল, আজৰ দলীয় নাম আৰু নিৰ্বাচনী প্ৰচাৰৰ নানান ঘটনা হাস্যৰসাত্মকভাৱে উপস্থাপন কৰা হৈছে। কিন্তু ইয়াৰ উদ্দেশ্য কোনো নিৰ্দিষ্ট ৰাজনৈতিক দল বা ব্যক্তিক লক্ষ্য কৰা নহয়। বৰং নিৰ্বাচনৰ সময়ত সমাজত সৃষ্টি হোৱা পৰিস্থিতি, সম্পৰ্কৰ পৰিৱৰ্তন, জনমনৰ আশা-আকাংক্ষা আৰু ৰাজনীতিৰ প্ৰভাৱক ব্যংগৰ ভাষাৰে ফুটাই তোলা হৈছে।

স্থানীয় সমাজৰ সুগন্ধেৰে
ভৰা ছবি

ছবিখনৰ এক বৃহৎ অংশ অসমৰ ৰেচম নগৰী শূৱালকুছিত চিত্ৰগ্ৰহণ কৰা হৈছে। প্ৰায় ২০০জন স্থানীয় বাসিন্দাই ছবিখনত বিভিন্ন ৰূপত অংশগ্ৰহণ কৰিছে। ইয়াৰ ফলত ছবিখনে কেৱল স্থানীয় পৰিৱেশৰ বাস্তৱ ৰূপেই নহয়, অসমৰ গ্ৰাম্য সমাজৰ জীৱনধাৰাও স্বাভাৱিকভাৱে দাঙি ধৰিবলৈ সক্ষম হৈছে।

নতুন প্ৰযোজকৰ আত্মপ্ৰকাশ

ৰিদম ক্ৰিয়েচনৰ বেনাৰত নিৰ্মিত 'XYZ' হৈছে শূৱালকুছিৰ হেমন্ত কলিতাৰ প্ৰথম প্ৰযোজিত ছবি। কাহিনী লিখিছে আশিক

সাধাৰণ মানুহৰ কাহিনীৰে ২৪
জুলাইত মুক্তি পাব নতুন অসমীয়া ছবি



জামানে। অভিনয় কৰিছে ভৱেশ বৰুৱা, সিদ্ধাৰ্থ শৰ্মা, উপকূল বৰদলৈ আৰু প্ৰণামী বৰাই। ইতিমধ্যে ছবিখনৰ পোষ্টাৰ আৰু ভাস্কৰ

অপস্থেলৰ কণ্ঠত গোৱা এটি প্ৰেমৰ গীত মুক্তি পাই দৰ্শকৰ দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰিছে।

সামাজিক চিন্তাৰ সৈতে

মনোৰঞ্জনৰ সমন্বয়

পৰিচালক হিমাংশু প্ৰসাদ দাসে পূৰ্বে 'গৰু', 'বুলু ফিল্ম' আৰু 'জয় হনু মান'ৰ দৰে ছবিৰ জৰিয়তে সামাজিক বিষয়বস্তুক মনোৰঞ্জনৰ সৈতে সফলভাৱে সংযোগ কৰিছে। 'XYZ'তো তেওঁ একেই ধাৰা অব্যাহত ৰাখিছে। এই ছবিত হাস্যৰসৰ আঁৰত গণতন্ত্ৰ, জনঅংশগ্ৰহণ আৰু ৰাজনীতিৰ সামাজিক প্ৰভাৱৰ দৰে গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয়সমূহক সহজ ভাষাত উপস্থাপন কৰাৰ চেষ্টা কৰা হৈছে।

অসমীয়া চলচ্চিত্ৰৰ বাবে

এক নতুন দিশ

বৰ্তমান সময়ত অসমীয়া চলচ্চিত্ৰত সামাজিক বাস্তৱতা আৰু সমসাময়িক বিষয়ক লৈ নিৰ্মিত ছবিৰ সংখ্যা বৃদ্ধি পাইছে। 'XYZ' সেই ধাৰাৰেই এক উল্লেখযোগ্য সংযোজন হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে। ছবিখনে কেৱল মনোৰঞ্জনই প্ৰদান নকৰি দৰ্শকক চিন্তা কৰিবলৈও উৎসাহিত কৰিবলৈ কেৱল নেতাৰ দ্বাৰা নহয়, নামহীন সাধাৰণ মানুহৰ অংশগ্ৰহণেৰেই শক্তিশালী হয়।

২৪ জুলাইত মুক্তি লাভ কৰিবলগীয়া 'XYZ'ই ব্যংগ, হাস্যৰস আৰু সামাজিক বাৰ্তাৰ সমন্বয়ে অসমীয়া চলচ্চিত্ৰপ্ৰেমীক এক নতুন অভিজ্ঞতা উপহাৰ দিব বুলি আশা কৰা হৈছে।

প্ৰয়াত বাঁহীবাদক দীপক শৰ্মাৰ অন্তিম গীত 'দুখৰ সুৰৰ বাঁহী' উন্মোচন



জন জন বিচাৰ
...গুৱাহাটী

ৰাজ্যৰ আগশাৰীৰ স্বেচ্ছাসেৱী সংগঠন 'দ্য হাৰ্ট' -ৰ হাতীগাঁওস্থিত কাৰ্যালয়ত প্ৰয়াত বিশিষ্ট বাঁহীবাদক দীপক শৰ্মাৰ স্মৃতিত তেওঁৰ অন্তিম সৃষ্টি 'দুখৰ সুৰৰ বাঁহী' শীৰ্ষক আধুনিক গীত উন্মোচন কৰা হয়।

বিশিষ্ট হৃদৰোগ বিশেষজ্ঞ তথা সংগীতশিল্পী ডাঃ চন্দন মোদকৰ কণ্ঠত গোৱা গীতটোৰ সংগীত পৰিচালনা কৰিছে মানস জ্যোতি হাজৰিকাই। গীতটোৰ কথা আৰু সুৰ প্ৰয়াত দীপক শৰ্মাৰ, সংগীত

ব্যৱস্থাপনা আৰু শব্দ সংমিশ্ৰণ মানস জ্যোতি হাজৰিকাক, গীটাবত তপন দাস আৰু ভিডিঅ পৰিচালনা কৰিছে অন্তৰীপ হাজৰিকাই।

গীত উন্মোচনী অনুষ্ঠানত বিশিষ্ট বাঁহীবাদক গুণিন শৰ্মা, ডাঃ স্বাতপৰ্ণ বৰুৱা, ডাঃ ৰূপজ্যোতি হাজৰিকা, কবি প্ৰণৱ কুমাৰ বৰ্মনকে ধৰি বহু বিশিষ্ট ব্যক্তি উপস্থিত থাকে। অনুষ্ঠানত বক্তাসকলে আশা প্ৰকাশ কৰে যে ডাঃ চন্দন মোদকৰ কণ্ঠত প্ৰয়াত দীপক শৰ্মাৰ এই অন্তিম সৃষ্টিয়ে সংগীতপ্ৰেমী ৰাইজৰ হৃদয় স্পৰ্শ কৰিব। গীতটো The Heart Entertainment-ৰ ইউটিউব চেনেলত উপলব্ধ।

IND 365 অসমne

বৰাৰে

নগাঁও, জাগীৰোড, হোজাই

লংকা, কঠিয়াতলি, কামপুৰ

বৰপেটা, নলবাৰী

ব পৰা সংবাদদাতা বিচৰা হৈছে

IND 365

দেখা কী আৱাজ অসম NE

The future depends
on what we do in the
present.

- Mahatma Gandhi

JAN JAN VICHAR

Guwahati, Friday, 3 July 2026

Assam Floods Turn Deadly

First Fatality Reported as Nearly 47,000 People Battle Rising Waters

Jan Jan Vichar

...Guwahati

Assam's annual flood crisis has intensified, claiming its first life of the season and affecting nearly 47,000 people across six districts. With rivers continuing to swell and fresh rainfall threatening to worsen the situation, authorities have stepped up relief and rescue operations while urging residents in vulnerable areas to remain alert.

According to the Assam State Disaster Management Authority (ASDMA), a woman was swept away by floodwaters in Sissiborgaon of Dhemaji district, marking the first flood-related death this year. The latest official assessment shows 46,938 people spread across 221 villages in 10 revenue circles are reeling under the impact of the floods.

Dhemaji remains the worst-affected district, accounting for over 45,800 affected residents, while Nalbari, Dibrugarh, Chirang, Lakhimpur, and Biswanath are also witnessing widespread inundation.

The situation remains fragile as the Brahmaputra at Neamatighat and the Disang River at Nanglamuraghat continue to flow above the danger level. Officials fear that continued rainfall could trigger fresh flooding and erosion in vulnerable regions.



A Recurring Challenge

Assam's geography makes it one of India's most flood-prone states. Every monsoon, overflowing rivers, heavy rainfall and erosion displace thousands of families, damage crops and strain public resources.

While emergency relief remains crucial, experts continue to stress the need for stronger embankments, improved river management, early-warning systems and climate-resilient infrastructure to reduce the recurring impact of floods.

Chief Minister Dr. Himanta Biswa Sarma said the state government is closely monitoring developments and has mobilised ministers and officials to supervise relief measures on the ground. Water Resources Minister Susanta Borgohain and Revenue and Disaster Management Minister Keshab Mahanta visited flood-hit areas along the Chakrang River in Gohpur to assess embankments, review relief operations and direct immediate protective measures.

Relief efforts are cur-

rently underway through four relief camps and six relief distribution centres, providing shelter and essential supplies to more than 450 displaced people. However, the scale of the disaster extends far beyond human settlements. Floodwaters have submerged 3,809 hectares of agricultural land, threatening livelihoods and food security, while over 88,000 animals, including nearly 50,000 large livestock, have been affected.

Roads, embankments and public infrastructure

have also suffered significant damage, disrupting connectivity and hampering movement in several districts. Restoration work is progressing alongside rescue and relief operations, though officials caution that persistent rainfall could complicate recovery efforts.

For now, thousands of families remain dependent on government assistance as the state braces for another spell of monsoon rain. The coming days will be critical in determining whether the flood situation stabilises or escalates further.

MIZORAM CELEBRATES 40 YEARS OF PEACE

Aizawl : As Mizoram commemorates the 40th anniversary of the historic Mizoram Peace Accord, the state's leadership has urged citizens to preserve the peace, unity and harmony that have transformed the former conflict-hit region into one of India's most peaceful and progressive states.

On the eve of Remna Ni (Peace Accord Day), Governor Vijay Kumar Singh and Chief Minister Lalduhoma paid tribute to the architects of the landmark 1986 agreement and remembered those who sacrificed their lives during the decades-long insurgency. Both leaders stressed that Mizoram's continued development depends on safeguarding the values of peace and social cohesion.

The Mizoram Peace Accord, signed on June 30, 1986, between the Government of India and the Mizo National Front (MNF), brought an end to nearly two decades of insurgency and remains one of the most successful peace agreements in independent India's history. It paved the way for democratic governance, political reconciliation and sustained economic and social development.

Describing the accord as a turning point in the state's history, Governor Vijay Kumar Singh said peace is much more than the absence of violence. He called it the foundation of democracy, human rights, trust, tolerance and brotherhood, adding that lasting peace creates opportunities for quality education, better healthcare, stronger infrastructure, investment, innovation and cultural growth.

Meghalaya Reconstitutes Panels to Resolve Remaining Assam Border Disputes

Shillong : The Meghalaya government has reconstituted three regional committees to expedite the resolution of the remaining six disputed sectors along the Assam-Meghalaya boundary. The panels have been directed to conduct joint field surveys with Assam and submit their recommendations within 45 days.

The move marks the second phase of the boundary settlement process after both states signed a 2022 Memo-

randum of Understanding (MoU) resolving six of the 12 disputed sectors. The remaining areas include Langpih, Borduar, Nongwah-Mawtamur, Deshdoonreah, Block-II, and Block-I/Psiar-Khanduli, which includes the sensitive Lapangap-Mukroh region. The committees, headed by senior ministers, will verify historical records, examine demographic evidence, inspect public assets and consult local communities before making recommendations.

Centre Rejects Chinese Intrusion Claims in Arunachal

Jan Jan Vichar

...New Delhi

The Union Government has dismissed claims that Chinese troops have intruded into Indian territory in Arunachal Pradesh, with Union Parliamentary Affairs Minister and Arunachal Pradesh MP Kiren Rijiju asserting that there has been no Chinese occupation of Indian land.

Breaking the Centre's silence on the issue, Rijiju clarified that incidents reported along the frontier stem from the fact that the India-China boundary remains undemarcated, leading to differing perceptions of the border by both sides.

'There is no intrusion. Since the boundary is not demarcated, transgressions happen from both sides', Rijiju said in an interview.

The statement follows allegations by a tribal



organisation in Arunachal Pradesh, which claimed that the Chinese People's Liberation Army (PLA) has been occupying ancestral grazing, farming and hunting land in the Upper Subansiri district for nearly six years. The organisation had demanded an official response from the Centre regarding the reported encroachment.

Rejecting the allegation of any territorial occupation, the government maintained that such incidents are linked to the unresolved

boundary dispute and the absence of a mutually accepted alignment of the Line of Actual Control (LAC).

India and China continue to hold diplomatic and military-level talks aimed at maintaining peace and stability along the frontier while pursuing a long-term resolution of the boundary issue. The Centre reiterated that India's security forces remain fully committed to protecting the country's territorial integrity and national interests.

Army Rejects Reports of Chinese Encroachment

New Delhi: The Indian Army has dismissed media reports alleging fresh Chinese PLA encroachment and the establishment of new camps in Arunachal Pradesh, stating that such claims are 'incorrect and without any basis.'

The clarification follows a memorandum submitted by the Nah Welfare Society of Taksing in Arunachal Pradesh's Upper Subansiri district, which alleged that Chinese forces had expanded their

presence in several border areas over the past decade and occupied five locations since 2020.

The organisation urged both the Centre and the Arunachal Pradesh government to take steps to safeguard the affected areas while expressing confidence in the Indian Army's role in securing the frontier.

Responding to the allegations, the Army reiterated that reports of any recent PLA encroachment or new military camps inside Indian territory are unfounded, seeking to allay concerns over the situation along the India-China border.



Rotary Guwahati Icons Installs New Leadership for 2026-27

Jan Jan Vichar

...Guwahati

The Rotary Club of Guwahati Icons successfully conducted its 6th Installation Ceremony at Hotel Vishwaratna, Guwahati, marking the formal transition of leadership for the Rotary year 2026-27. The ceremony brought together Rotary leaders, distinguished guests, members, Rotarylets and well-wishers to celebrate another milestone in the club's journey of service.

Outgoing President Rtn. Dipanjan Dasgupta and Secretary Rtn. Bhaskar Upadhyaya presented the club's achievements during the past Rotary year, highlighting impactful service initiatives undertaken under the Rotary International theme 'Unite for Good'.

The highlight of the evening was the Ceremonial Change of Guard, during which Rtn. Sudha Laskar officially assumed office as the President of the Rotary Club of Guwahati Icons for the Rotary year 2026-27, while CARtn. Himanshu Agarwal took over as the Club Secretary. The installation was officiated by PDG Prabhat Kedia, who administered the oath of office and formally handed over the club's leadership.

In her acceptance address,

Reinforces Commitment to Creating Lasting Impact



President Rtn. Sudha Laskar unveiled her vision for the year under the Rotary International theme 'Creating Lasting Impact', emphasizing meaningful community service, youth empowerment, healthcare, education, environmental sustainability and stronger member engagement. The new Board of Directors and Office Bearers for 2026-27 were also introduced and officially installed.

The ceremony was graced by Hon'ble MLA Shri Pradyut Bordoloi as the Chief Guest, who lauded Rotary's continued contribution towards community development and encouraged members

to further strengthen their service initiatives. The event was also attended by PDG Dr. N. N. Dutta (Guest of Honour), PDG Prabhat Kedia (Installation Officer), Rtn. Rajesh Singh, Assistant Governor, Zone X, and Smt. Nishita Goswami as Special Guest, all of whom addressed the gathering and appreciated the club's dedication to humanitarian service.

As part of the celebrations, the club recognised Rotarylets Riyansika Laskar, Nirvan Nag Choudhury and Sneha Dasgupta for their outstanding academic achievements. The occasion also witnessed the release of the Rotary Club of

Guwahati Icons Souvenir, showcasing the club's achievements, initiatives and vision for the future.

The club further welcomed new members into the Rotary family through an induction and oath-taking ceremony, reaffirming its commitment to expanding its network of service-minded professionals.

With a renewed leadership team and a clear vision, the Rotary Club of Guwahati Icons begins the Rotary year 2026-27 with a strong commitment to creating sustainable and meaningful change in society through impactful service projects and collaborative community engagement.

Global Signals Push Gold and Silver Lower

Jan Jan Vichar

... New Delhi

After witnessing a remarkable surge earlier this year, gold and silver prices have recorded a sharp correction, offering some relief to jewellery buyers while prompting investors to reassess their strategies.

According to data released by the India Bullion and Jewellers Association (IBJA), the price of 24-carat gold fell by around Rs. 5,100 per 10 grams during the past week, settling near Rs1.40 lakh. Silver also declined significantly, losing more than Rs15,000 per kilogram to trade at around Rs 2.17 lakh per kg.

Why Are Precious Metals Falling?

Market experts attribute the decline to a combination of global economic and geopolitical developments.

The easing of tensions in West Asia, following reports of a ceasefire agreement involving the United States and Iran, has reduced demand for tradi-

tional safe-haven assets such as gold and silver. Investors have shifted part of their funds towards equities and other risk-oriented investments.

Another important factor is the changing outlook of the US Federal Reserve. Expectations that interest rates could remain elevated for longer have strengthened the US dollar. Since precious metals do not generate interest income, higher interest rates generally reduce their appeal and put downward pressure on prices.

Analysts also point to widespread profit-booking after both metals touched historic highs earlier this year. In addition, selling pressure in Gold and Silver Exchange Traded Funds (ETFs) has contributed to the recent correction.

A Volatile Year

Despite the latest decline, precious metals have experienced exceptional volatility in 2026.

Gold climbed to an all-time high earlier this year



before retreating sharply, while silver witnessed an even steeper rally followed by a substantial correction. Such large price swings underline the influence of global economic conditions, central bank policies, currency movements, and geopolitical events on bullion markets.

Should Buyers Worry?

Financial advisers believe the current decline may present an opportunity for long-term buyers, particularly those planning jewellery purchases or gradual investment through

systematic buying. However, experts caution against making decisions based solely on short-term price movements, as precious metals remain highly sensitive to global developments.

Tips Before Buying Gold

Purchase only BIS hall-marked jewellery to ensure authenticity and purity.

Compare daily prices from reliable bullion sources before making a purchase.

Understand the difference between 24-carat, 22-carat, and 18-carat

gold before buying.

Ask for a proper invoice mentioning purity, weight, and making charges.

How to Identify Genuine Silver

Consumers can perform a few simple checks to identify genuine silver:

Silver is generally non-magnetic and does not stick to a magnet.

It conducts heat efficiently, causing ice placed on it to melt quickly.

Genuine silver is odourless, unlike some imitation metals.

Rubbing silver with a clean white cloth may leave a dark mark due to natural oxidation, which is considered normal.

As global markets continue to react to economic policies and geopolitical developments, bullion prices are expected to remain volatile in the coming weeks. Investors are advised to focus on long-term financial goals rather than short-term market fluctuations.

Indian Army Plans Special 'Baaz Battalions' to Strengthen Drone Warfare Capabilities

Jan Jan Vichar

... New Delhi

The Indian Army is reportedly preparing to establish specialised 'Baaz Battalions' as part of its growing focus on drone warfare, aerial surveillance, and intelligence-driven military operations. The initiative is aimed at strengthening battlefield awareness and enhancing the Army's ability to respond rapidly to emerging security challenges.

According to defence sources, the proposed battalions will support frontline formations by operating unmanned aerial systems (UAS), providing real-time surveillance, reconnaissance, and intelligence. They are expected to play a key role in monitoring sensitive border regions and improving coordination between

combat units and intelligence networks.

The move follows India's continued emphasis on modernising its armed forces through advanced technologies. Military planners have increasingly recognised the importance of drones in contemporary conflicts, where unmanned systems are being used for surveillance, precision targeting, logistics, and electronic warfare.

Army Chief General Upendra Dwivedi recently stated that the proposed Baaz Battalions would be built around the Army's existing remotely piloted aircraft (RPA) capabilities. Specially trained personnel are expected to operate and manage these systems, strengthening the Army's Intelligence, Surveillance, and

Reconnaissance (ISR) capabilities.

Defence officials believe the new formations are likely to function under the Army Aviation Corps, although the final organisational structure has not yet been officially announced.

The initiative reflects lessons drawn from recent conflicts, including the Russia-Ukraine war, continuing military tensions along the Line of Actual Control (LAC) with China, and India's recent military operations, where drones demonstrated their growing importance in modern combat. These experiences have reinforced the need for persistent aerial surveillance and faster battlefield decision-making.

According to statements made by the Army Chief, the

Indian Army's drone inventory has expanded significantly over the past two years—from only a few hundred unmanned systems to more than 50,000. The number is expected to increase further over the next two to three years as indigenous production and technological integration accelerate.

Defence analysts say the proposed Baaz Battalions represent another step in India's broader military transformation, shifting towards technology-enabled, network-centric warfare where unmanned systems complement conventional forces. If implemented as planned, the specialised units could substantially improve India's operational preparedness along its borders and in future high-intensity conflicts.

Ram Mandir Trust Restructuring Demand

Lucknow: A fresh debate has emerged over the management of the Shri Ram Janmabhoomi Teerth Kshetra Trust, with BJP MLC Devendra Pratap Singh writing to the Prime Minister seeking the Trust's restructuring. He has proposed including descendants of Lord Ram, families of kar sevaks, and key contributors to the Ram Mandir movement in the Trust to enhance transparency and public confidence. Meanwhile, Hanumangarhi Mahant Dharm Das has urged that the temple's religious and administrative affairs be entrusted to saints and seers, while the Trust should remain responsible only for financial management.

The Limits of Politics Built on Intimidation

The recent weakening of Shiv Sena (UBT), with several Members of Parliament shifting allegiance to the Eknath Shinde-led faction, marks another turning point in Maharashtra's political landscape. Once regarded as the state's most influential regional force, the party now faces a serious challenge to its political relevance.

Political parties may rise through strong leadership and emotional appeal, but they cannot sustain themselves without democratic institutions, internal unity, and public trust. Regional identity, cultural pride, and linguistic concerns are legitimate political issues, yet they cannot become substitutes for constitutional values or inclusive governance. History has repeatedly shown that politics driven by confrontation, intimidation, or personality cults eventually loses public support.

Shiv Sena's journey reflects how internal divisions, ideological shifts, and prolonged power

struggles can weaken even a dominant political organization. The split within the party has significantly altered Maharashtra's political equations and serves as a reminder that democratic legitimacy ultimately depends on the confidence of elected representatives and the people. For every regional party in India, the message is clear: durable political success comes from development, transparent leadership, respect for the Constitution, and effective governance—not from coercive methods or divisive rhetoric.

Challenges for next UN secretary-general

— Jan Jan Vichar —



... Shashi Tharoor

Dag Hammarskjöld, the United Nations' second secretary-general, once offered what remains perhaps the clearest statement of the organisation's purpose. The UN, he said, "was not created to take mankind to heaven, but to save humanity from hell". The remark reflected the hard lessons of the first half of the 20th century, when two world wars, genocide, imperial conquest and the horrors of the Holocaust and Hiroshima devastated much of the globe. The UN was never intended to create a perfect international order; it was designed to prevent the recurrence of such catastrophes. Eighty years after its founding, that mission looks increasingly precarious.

Armed conflicts are multiplying. Nuclear risks have returned to strategic calculations. International law is under pressure, while the Security Council, the world's principal instrument of collective security, is frequently paralysed by the rival interests of its permanent members. When cooperation is most needed, faith in multilateralism is ebbing as great-power rivalry thrives. Against this backdrop, the race to succeed António Guterres, whose term ends in December 2026, has assumed unusual significance. The next secretary-general will inherit what has often been described as the "most impossible job" on Earth. Yet there are moments when impossible jobs matter most.

Erosion of collective security

The next UN chief will take office as the restraints that have helped contain international rivalry since 1945 visibly weaken. For all

its shortcomings, the post-war order achieved something remarkable: It prevented World War III. Proxy wars, regional conflicts and repeated crises occurred, but direct military confrontation between the major powers was avoided. Colonial empires disappeared, dozens of new nations emerged, and institutions of international cooperation often prevented local conflicts from becoming global disasters. Today, those achievements are under strain. Russia's invasion of Ukraine, the devastation in Gaza, widening conflicts across West Asia, tensions in the South China Sea and the erosion of arms-control agreements all point to a world more willing to rely on force and coercion. Many smaller countries feel like mere spectators rather than participants in shaping the international order.

It is in moments such as these that the secretary-general's role assumes particular importance. The office's most successful occupants understood that preserving peace required more than administrative competence. Hammarskjöld helped navigate the Suez crisis and transformed peacekeeping into a practical instrument of conflict management. U Thant quietly created diplomatic space during the Cuban missile crisis, while Javier Pérez de Cuéllar helped broker settlements from Afghanistan to Central America and contributed to the Cold War's peaceful conclusion. Kofi Annan became a moral voice for peace and humanity and was widely described as the 'secular Pope'. Their influence rested not on formal authority but on credibility, discretion and the ability to help governments change course without appearing to surrender. That tradition has faded.

The secretary-general still commands a global platform unmatched by most political leaders. Yet the office has become increasingly cautious in using that authority. When governments hesitate to speak un-

comfortable truths, excessive caution carries its own risks. The next secretary-general should not merely respond to crises but identify dangers before they erupt. Too often, the international community mobilises only after violence and humanitarian disasters have escalated. The most immediate challenge is the widening gulf among the major powers. Relations between the US, China and Russia have deteriorated sharply. The office requires someone capable of combining public candour with private persuasion. Its greatest asset may be the ability to keep conversations alive when others stop talking.

Recent setbacks in negotiations on nuclear disarmament, pandemic preparedness and plastic pollution illustrate a broader problem. International negotiations now struggle to move beyond entrenched positions. Diplomatic breakthroughs rarely occur by accident. The Universal Declaration of Human Rights, the Nuclear Non-Proliferation Treaty and the Paris climate agreement emerged through painstaking negotiations that uncovered common ground despite profound differences. The UN should invest more in mediation, negotiation support and conflict-resolution capacity.

The organisation also faces a legitimacy crisis. Across much of the Global South, governments believe the international system applies its principles inconsistently. Frustration over Security Council reform has accumulated for decades, while institutions designed in 1945 continue to reflect a world that no longer exists. Whether the next secretary-general comes from Latin America or the Caribbean, whose turn it is under the informal regional rotation, geography alone will not solve that problem. What matters is whether the office becomes a persistent advocate for a more representative international order.

Paradox of multilateralism

The UN must also adapt to a

changing landscape in which cities, universities, philanthropic foundations, civil-society organisations and private-sector actors possess capabilities once associated almost exclusively with states. During periods of governmental deadlock, these networks often remain capable of advancing cooperation. Perhaps the greatest challenge lies not within institutions but in political culture. The generation that experienced world war, genocide and nuclear brinkmanship required little persuasion about the consequences of international failure. Today's leaders are more distant from those experiences, even as many of the dangers that inspired the UN's creation have returned.

The next secretary-general cannot restore the UN's relevance alone. But the office can remind governments and the public that multilateralism is not idealism but a practical necessity. Climate change, pandemics, mass displacement, cyber insecurity and nuclear proliferation do not respect borders. As Kofi Annan observed, they are 'problems without passports'. The next secretary-general will inherit an organisation under financial pressure, confronting geopolitical fragmentation and facing widespread scepticism about its effectiveness. Yet the history of the UN offers a paradox. The organisation has seldom been most valuable when relations among states were harmonious. Its greatest contributions often came during periods of intense division, when channels of communication were scarce, and mistrust was abundant.

The secretary-general cannot end wars by decree or reshape international politics alone. What the office can do is create opportunities for diplomacy, preserve lines of communication and expand the political space in which compromise becomes feasible. The job remains impossible. The alternative, however, is a world in which nobody is left trying to save humanity from hell.

Jan Jan Vichar

The Student's Corner

Board Exam Focus

Look around you. The spoon you use, the fan in your room, the aluminium foil in your kitchen, the iron gate outside your home and even the gold ornaments we wear are all made from metals. On the other hand, oxygen, sulphur, chlorine and carbon are non-metals that play equally important roles in our daily lives.

Understanding the properties of metals and non-metals helps us explain why different materials are used for different purposes. It also introduces important industrial processes such as metal extraction, alloy formation and corrosion prevention.

Physical Properties of Metals

Metals are generally:
Lustrous (shiny), Hard and strong, Malleable (can be beaten into thin sheets), Ductile (can be drawn into wires), Good conductors of heat and electricity, Sonorous (produce ringing sound)

Exceptions- Sodium and potassium are soft enough to cut with a knife.

Mercury is the only metal that remains liquid at room temperature.

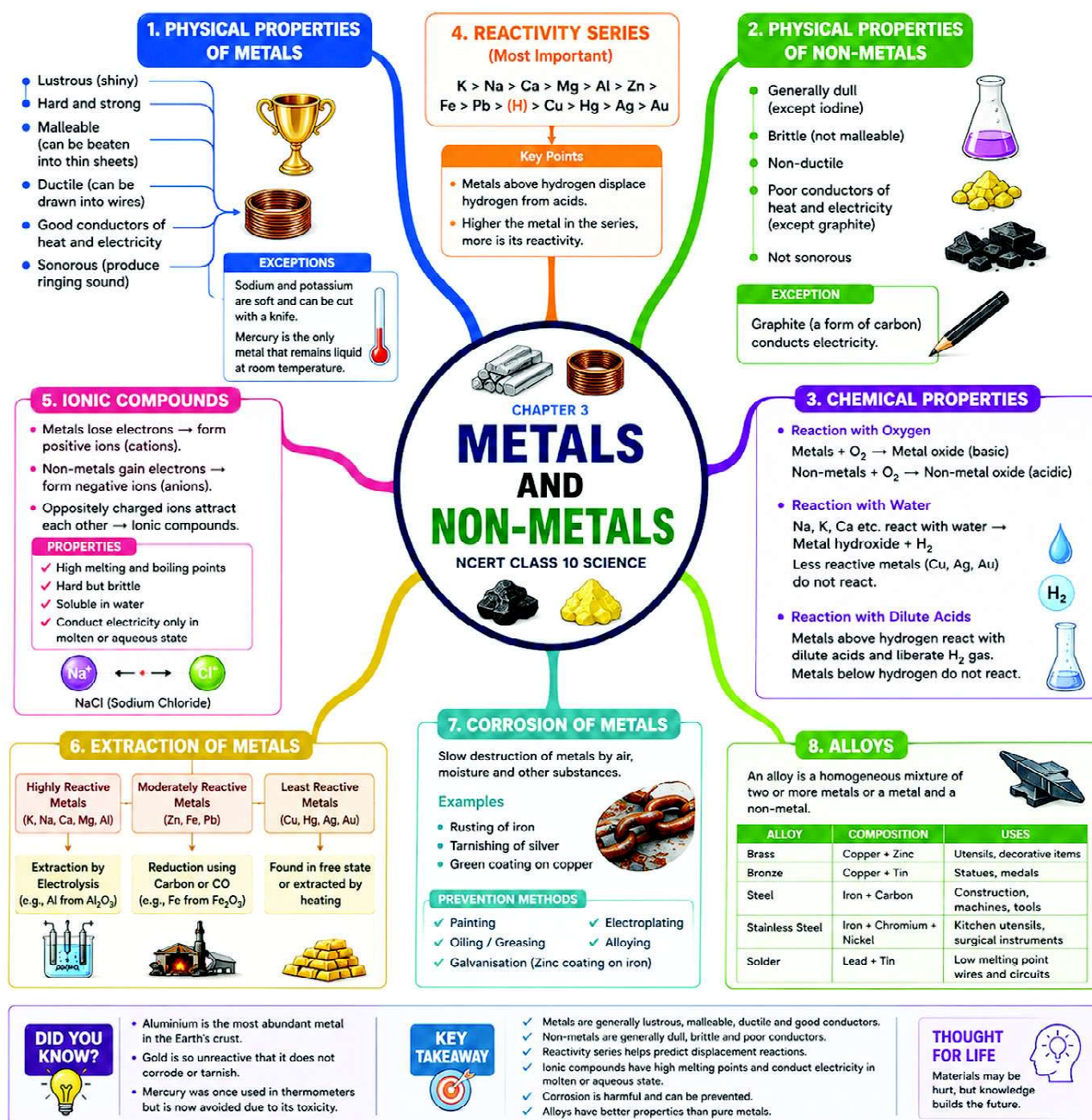
Physical Properties of Non-metals

Most non-metals are:
Dull, Brittle, Poor conductors of heat and electricity, Not malleable or ductile, Not sonorous

Exception : Graphite (a form of carbon) conducts electricity.

Metals and Non-metals

Understanding the Materials That Shape Our World



Chemical Properties

Reaction with Oxygen : Metals combine with oxygen to form metal oxides, which are generally basic.

Example: $2Mg + O_2 \rightarrow 2MgO$

Non-metals combine with oxygen to form acidic oxides.

Reaction with Water : Highly reactive metals like sodium react vigorously with water and release hydrogen gas.

$2Na + 2H_2O \rightarrow 2NaOH + H_2$

Less reactive metals such as copper and silver do not react with water.

Reaction with Dilute Acids : Metals react with dilute hydrochloric acid or sulphuric acid to produce hydrogen gas.

$Zn + 2HCl \rightarrow ZnCl_2 + H_2$

Copper, silver and gold do not react with dilute acids.

The Reactivity Series

$K > Na > Ca > Mg > Al > Zn > Fe > Pb > H > Cu > Hg > Ag > Au$

Remember:

"Please Stop Calling Me A Zebra Instead Try Learning How Silver Glitters Always."

The higher the metal in the series, the more reactive it is.

Ionic Compounds: Metals lose electrons and form positive ions.

Non-metals gain electrons and form negative ions.

These oppositely charged ions attract each other to form ionic compounds.

Properties : High melting and boiling points
 Conduct electricity only in molten or aqueous state
 Usually soluble in water
 Hard but brittle

Extraction of Metals

The method of extraction depends on the metal's reactivity.

Highly Reactive Metals

→ Electrolysis

Moderately Reactive Metals

→ Reduction using carbon

Least Reactive Metals

→ Found in free state

Corrosion : Corrosion is the slow destruction of metals due to reaction with air and moisture.

eg : • Rusting of iron • Tarnishing of silver • Green coating on copper

Prevention : Painting, Oiling, Greasing, Galvanisation, Electroplating

Alloys: An alloy is a mixture of two or more metals or a metal with a non-metal.

Examples

Alloy	Composition	Uses
Brass	Copper + Zinc	Utensils
Bronze	Copper + Tin	Statues
Steel	Iron + Carbon	Construction
Stainless Steel	Iron + Chromium + Nickel	Kitchen utensils

"Science helps us understand not only what materials are made of, but also why the world around us works the way it does."

Red Takes Flight Again

THE ANGRY BIRDS MOVIE 3

Promises a Heartwarming Adventure

The world's favourite grumpy bird is back, but this time his fiercest battle isn't against the mischievous green pigs. In *The Angry Birds Movie 3*, Red must take on a challenge that many superheroes know all too well—parenthood.

Paramount Pictures has unveiled the official trailer for the third installment of the blockbuster animated franchise, offering fans a colourful glimpse into an adventure that blends action, comedy and family emotions. The film introduces a fresh storyline where Red discovers that raising a family can be every bit as demanding as saving the world.

The trailer opens with familiar faces from Bird Island before revealing an unexpected twist. Red finds himself navigating the responsibilities of fatherhood while being pulled into a dangerous global mission. The result is a heartwarming tale that promises laughter, excitement and emotional moments for audiences of all ages.



Director
John Rice

Screenplay
Thurop Van Orman

Produced by
John Cohen, Dan Chuba, Carla Connor & Namit Malhotra

Lead Voice
Jason Sudeikis (Red)

Genre
Animated Family Adventure

India Release
1 January 2027

Languages
English & Hindi

A Hero in a New Role

For years, Red has been the fearless protector of Bird Island, defeating enemies and leading daring missions. In the latest film, however, his greatest test comes much closer to home. Parenthood forces him into unfamiliar territory, challenging his patience, courage and priorities in ways no previous adventure has.

The film explores an important message—that true heroism is not only about defeating villains but also about caring for loved ones and accepting new responsibilities.

An Impressive Voice Cast

Directed by John Rice from a screenplay by Thurop Van Orman, the film brings together an impressive ensemble of voice actors. Jason Sudeikis returns as Red alongside Josh Gad, Danny McBride, Emma Myers, Rachel Bloom, Walker Scobell, Marcello Hernández, Tim Robinson, Anna Cathcart, Maitreyi Ramakrishnan, Nikki Glaser, Sam Richardson, James Austin Johnson, Lily James, Keke Palmer, internet creator MrBeast and several other popular performers.

Produced by John Cohen, Dan Chuba, Carla Connor and Namit Malhotra, the movie continues the successful partnership behind the previous installments.

A Family Entertainer for the New Year

According to the official synopsis, 'One angry bird will face his greatest challenge yet—surviving fatherhood while saving the world.' The trailer suggests that audiences can expect breathtaking animation, hilarious comedy and a touching story about love, responsibility and personal growth.

With its colourful visuals, memorable characters and meaningful message, *The Angry Birds Movie 3* looks set to become one of the most anticipated animated releases of the holiday season.

The film will hit Indian theatres in English and Hindi on January 1, 2027, giving families an entertaining start to the New Year.

- Parenthood is Red's toughest mission yet—and perhaps his most rewarding one.
- Being a hero at home can be just as challenging as saving the world.
- One angry bird. One growing family. One unforgettable adventure.

Why Angry Birds Still Rules the Animation World



What began as a simple mobile game in 2009 has grown into one of the world's most successful entertainment franchises. Created by Rovio Entertainment, Angry Birds has been downloaded billions of times and expanded into animated films, television series, toys, books, and merchandise.

The franchise's enduring appeal lies in its colourful characters, simple humour, and universal themes of friendship, courage, and teamwork. While the original game centred on birds battling mischievous green pigs, the films have transformed these characters into relatable personalities with emotional depth and family values.

With *The Angry Birds Movie 3*, the franchise takes a more emotional turn by exploring family life and parenthood while retaining the humour and adventure that made it famous.

D.S. ASSOCIATES
— TAX CONSULTANTS

TRUSTED ADVISORS

ONE-STOP SOLUTION

ALL YOUR TAX & FINANCE NEEDS UNDER ONE ROOF

Expert, reliable and timely solutions for individuals, businesses & startups — handled by experienced professionals you can trust.

◆ OUR SERVICES ◆

● Income Tax Returns	● GST Registration & Filing
● Audit	● Accounting & Book Keeping
● Loans	● Insurance
● Company Registration	● Import & Export Compliance
● Trademark Registration	● FSSAI Registration
● Subsidy Related Works	● Documentation Services

...AND MANY MORE SERVICES

CALL US TODAY

Mohan Choudhary
70026 82705

Subhash Choudhary
84728 20656

Email : dssalestax@gmail.com